केवट-गीता

रचनाकार

आचार्यश्री सुदर्शनजी महाराज

प्रकाशक

आत्मकल्याण केन्द्र

गुड़गाँव (हरियाणा)

केवट-गीता

रचनाकार

आचार्यश्री सुदर्शनजी महाराज

© सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 65/-

प्रकाशक

आत्मकल्याण केन्द्र

सुदर्शनधाम, बादशाहपुर, गुड़गाँव (हरियाणा)

फोन : 0124-2394650, 2564260

सम्पर्क सूत्र : 09334118812 • फैक्स : 0124-2564260

Website : www.shrisudarshanjimaharaj.org

E-mail : info@shrisudarshanjimaharaj.org

दो शब्द

केवट रामकथा का एक ऐसा पात्र है जो अपनी उपस्थिति से रामायण की घटनाओं को जोड़ता है । अति सामान्य-सा दीखने वाला एक साधारण-सा नाविक पूरी कथा को दिशा देने में समर्थ है । गरीब, उपेक्षित और दीन-हीन अवस्था में अपना जीवन व्यतीत करने वाला केवट मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम को गंगा तट पर देखकर बड़े ही स्पष्ट स्वर में कहता है कि मैं तुम्हारी आज्ञा मानने के लिए विवश नहीं हूँ । वह राम के अनुरोध को भी अस्वीकार करता है । इस अस्वीकृति से पता चलता है कि रामकथा में श्रीराम का जो चरित्र उभरा है वह किसी चक्रवर्ती सम्राट् और महाप्रतापी राजा के पुत्र का चरित्र नहीं है । क्योंकि राम अगर सम्राट् के पुत्र बनकर वहाँ जाते तो एक साधारण नाविक उनकी आज्ञा को अस्वीकार नहीं करता । स्पष्ट है कि राम भी एक साामान्य मानव की तरह केवट के पास स्वयं जाते हैं और गंगा पार कराने के लिए अनुनय-विनय करते हैं । इससे पता चलता है कि राम कोई सामन्तवादी परम्परा का पालन करने वाले नहीं है, वे समाज में ऊँच-नीच, छोटे-बड़े के भाव को नष्ट करना चाहते हैं । मुझे लगता है कि प्रजातंत्र की व्यवस्था शायद यहीं से शुरू हुई होगी । जिस दिन देश का सम्राट् किसी गरीब की कुटिया तक पहुँच जाए और उससे प्रेमपूर्ण व्यवहार करने लगे तो समझना चाहिए सचमुच देश में प्रजातांत्रिक व्यवस्था शुरू हो गई है ।

केवट इसलिए दो परम्पराओं के बीच में खड़ा है । एक तरफ सम्राट् खड़े हैं और दूसरी तरफ एक झोपड़ी-झुग्गी वाला स्वाभिमान के साथ खड़ा है । यहाँ तक केवट के जीवन का एक पक्ष है और उसके जीवन का दूसरा पक्ष है– उसकी साख्य भाव की भक्ति । वह राम को दास्य भाव से नहीं देख रहा है बल्कि सखा भाव से देख रहा है । यह जो सखा-भाव है, इसी से समतामूलक समाज की स्थापना होती है । केवट भी अपने को उपेक्षित नहीं मान रहा है । वह राम का पाँव भी धोता है, लाड़-प्यार भी करता है और गले भी लगता है । उसके हठ को देखकर पहले तो लगता है कि वह उद्दण्ड है । लेकिन बाद में पता चलता है कि वह भक्त है और भक्त को लाड़-प्यार करने का पूरा अधिकार है । स्वामी रामकृष्ण भी तो माता से झगड़ते थे और ऐसी वृत्ति उसी भक्त के मन में होती है जो नि:स्वार्थ और निष्काम बन जाता है । अर्जुन भी कृष्ण का सखा है लेकिन वह उच्च कोटि का भक्त है । वही भाव केवट के हृदय में भी है । केवट की निश्छल भक्ति देखकर ही श्रीराम उसकी अवज्ञा को भी मुस्कुराते हुए झेलते हैं । लक्ष्मण जब आक्रोश करते हैं तब उसे भी शान्त करते हैं और केवट को बोलने देते हैं । बड़ा उटपटांग लगता है उन लोगों के लिए जो श्रीराम के भक्त हैं । वे अपने भगवान को एक साधारण केवट से प्रताड़ित होते देख रहे हैं । लक्ष्मण ने जो विरोध किया, उसके विरोध का यही भाव है कि वह जानता है कि श्रीराम उसके भगवान हैं और उसके भगवान को केवट डाँटे चला जा रहा है । यह कोई साधारण घटना नहीं है कि रामायण का महानायक एक केवट से डाँट खाये । यह अद्‌भुत घटना है । इस भाव को केवट भी समझता है, लेकिन उसकी भक्ति इतनी प्रगाढ़ है कि भगवान को तुम-ताम कहकर अपने ही शर्तों पर उनकी आज्ञा का पालन करना चाहता है । प्राय: ऐसा नहीं होता है कि किसी नायक को कोई साधारण

व्यक्ति इतनी डाँट-फटकार सुनाये । इसलिए मैं केवट को एक महान् पात्र मानता हूँ । गंगा-तट पर राम खड़े हैं, साथ में उनकी पत्नी और छोटा भाई खड़ा है। केवट गंगा में खड़ी नाव में बैठा है, वहीं से अपनी बातों को मनवाना चाहता है । एक दृष्टि से उन लोगों के लिए यह दुर्विनीत व्यवहार है जो छिछले ढंग से केवट को देखते हैं । लेकिन केवट की भक्ति निश्छल है । वह अपने भगवान को पहचानता है । इस भगवान को पाने के लिए वह पिछले जन्म से प्रतीक्षा कर रहा है । इसीलिए वह अपने परमात्मा से अपनी वात्सल्य पूर्ण भक्ति के कारण लड़ रहा है । दरअसल केवट के मन में कोई रोष या अवज्ञा का भाव नहीं है । वह इतना प्रेमपूर्ण है कि सारी औपचारिकता भी भूल चुका है ।

आज हम अपने परिवार के सामान्य सदस्य को भी "आप" कहते हैं। लेकिन केवट प्रभु को तुम कह रहा है । "आप" शब्द में औपचारिकता है । लेकिन तुम शब्द में अपनत्व है । **"त्वम्असि"** मतलब तुम्हीं सब कुछ हो, यह भाव है केवट के मन में । इसलिए वह तमाम औपचारिक बंधनों को तोड़ते हुए अपने राम से शर्त्त पूर्ण निवेदन कर रहा है । राम की शर्त्त यह है कि तुम मुझे गंगा पार करा दो, यह राम की आज्ञा है और शर्त्त भी । केवट उनकी आज्ञा को अपनी शर्त्त पर पालन करना चाहता है । प्रभु राम, पहले मेरी बात सुनें, पहले मेरी बात मानें, फिर मैं तुम्हारी बात सुनूंगा, यह केवट का शर्त्तपूर्ण अनुरोध है । इसी अनुरोध का लक्ष्मण विरोध करते हैं, क्योंकि लक्ष्मण केवट को समझ नहीं पा रहे हैं । दूसरी ओर सीता सब कुछ जानते हुए केवल मुस्कुरा रही हैं, भगवान् और भक्त के लाड़ को देख रही हैं । लक्ष्मण ने इसलिए विरोध किया कि वह इस रहस्य को नहीं समझ सका । लक्ष्मण के मन में सामन्तवादी प्रथा, सम्राट् के पुत्र होने का अहंकार हो सकता है, जिस कारण वह इस लाड़ प्यार को नहीं समझ पा रहा है । क्योंकि जहाँ अहंकार होता है वहाँ प्यार नहीं रहता है । मनुष्य के जीवन में जब अहंकार आता है तो प्रेम तिरोहित हो जाता है । प्रेम का निवास अहंकार के घर में नहीं हो सकता । प्रेम तो समर्पण है । स्वयं के विसर्जन को ही प्रेम कहते हैं । जब तक दो का भाव मन में रहता है तब तक प्रेम घटित नहीं हो सकता । क्योंकि प्रेम आत्म-विस्मरण है । केवट मानता है कि वह तो है ही नहीं । वह तो कब का विलीन हो चुका है । इसलिए वह राम को एकात्म भाव से देख रहा है ।

इस लघु पुस्तिका में प्रथम बार रामकथा में वर्णित श्रीराम-केवट संवाद प्रसंग को गीता संदेश के रूप में दिखाने का प्रयास किया गया है। यहाँ पर केवट के अन्तर्मन के भाव को साख्य रूप में प्रभु के प्रति निवेदित किया गया है। इस पुस्तिका में वर्णित तथ्य को आधुनिक गीता कहना कोई अप्रासंगिक नहीं होगी, क्योंकि अर्जुन को श्रीकृष्ण द्वारा दिए गए गीता-संदेश सदृश सदुपदेश यहाँ द्रष्टव्य है।

इसके साथ ही केवट के सामाजिक, पारिवारिक और पूर्वजन्म-कथात्मक इतिवृत्त को समाहित कर इसमें कुछ नवीन कल्पना को स्थान दिया गया है जिसे पाठकबन्धु समादृत करेंगे ।

धन्यवाद !

आचार्यश्री सुदर्शनजी महाराज

चैत्र रामनवमी 2012

❀❀❀

केवट-गीता की आध्यात्मिक विशेषता

1. केवट कौन था ?
2. श्रीराम के बुलाने पर केवट ने नाव क्यों नहीं लाया ?
3. केवट क्या चाहता था ?
4. केवट चरण पखारने के लिए इतना आतुर क्यों था ?
5. पार जाने पर केवट ने उतराई क्यों नहीं ली ?
6. "दीनदयाल अनुग्रह तोड़े" इसका क्या अर्थ है ?
7. केवट ने अपने पितरों को ताड़ने की बात क्यों कही ?
8. 'अब कछु नाथ न चाहिए मोरी' इसका क्या अर्थ है ?
9. केवट–गीता का संदेश ।
10. केवट की ओर से प्रथम बार प्रभु को धन्यवाद कैसे किया गया?

❀❀❀

अनुक्रमणिका

क्र० सं०	शीर्षक	पृ० सं०
1.	केवट कौन था ?	1
2.	केवट की प्रार्थना और श्रीराम का उपदेश	16
3.	श्रीराम-केवट का संवाद	41
4.	केवट का सामाजिक परिवेश	56
5.	केवट की पारिवारिक स्थिति	62
6.	एक आदर्श आश्रम-व्यवस्था	65
7.	आचार्य सुदर्शनजी द्वारा संचालित जनकल्याणकारी.....	71
8.	ज्ञानमूर्ति ब्रह्माण्डविद् महामानव शिखरपुरुष.....	79

❀❀❀

केवट कौन था?

केवट के संबंध में कहा जाता है कि वह महर्षि वशिष्ठ का पुत्र था । वह ज्ञानी था, और इसी ज्ञान के कारण अहंकारी हो गया था । महर्षि वशिष्ठ और अरुन्धती के सौ पुत्र हुए थे, जिसे विश्वामित्र ने लड़ाई में मार दिया था । संतों का मानना है कि केवट उन्हीं भाइयों में से एक था ।

कहते हैं महाराज दशरथ को जब श्रवण कुमार की हत्या के कारण ब्रह्म-हत्या का दोष लगा तो महाराज दशरथ चिन्ता में पड़ गए । क्योंकि वे जानते थे यह ब्रह्म-हत्या का दोष उन्हें अनजाने में लग गया है, लेकिन प्रकृति का यह नियम है कि पाप जान कर हो या अनजाने में हो, पाप तो पाप ही है । जैसे अनजाने में अगर आग पर हाथ पड़ जाये तो भी हाथ जलता है । अनजाने में कोई वृक्ष से गिर जाये तो भी हाथ पाँव टूटता है । दरअसल, प्रकृति ने अपना स्पष्ट नियम बना रखा है । एक तरफ शुभकर्म है दूसरे तरफ अशुभ कर्म है । आप जो भी कर्म करेंगे, उसका अच्छा या बुरा फल आपको अवश्य भोगना पड़ेगा । प्रकृति के नियम में अगर-मगर नहीं चलता, भूल अनजाने में हुई, लेकिन भूल तो भूल है । इसलिए महाराज दशरथ ने नैतिक नियमों का पालन करते हुए निश्चय किया कि उन्हें इसका प्रायश्चित करना चाहिए । महाराज दशरथ चाहते तो इस बात को छिपा लेते । लेकिन छिपाने से किसी घटना का प्रभाव कम नहीं होता । जैसे कोई व्यक्ति अन्धेरी रात में कहीं कोई अपराध करता है, तो यह ठीक है कि वहाँ कोई उसे देख नहीं रहा है । लेकिन दो चार दिनों में उस बात को कई लोग जानने लगते हैं । क्योंकि यह प्रकृति और विज्ञान

का भी नियम है कि जो भी घटनायें घटती हैं, उसका प्रभाव अनन्त काल तक वातावरण में रहता है । इसलिए रहीम कवि कहते हैं-

"खैर खून खांसी खुशी, बैर प्रीत मधुपान ।
रहिमन दाबे ना दबे, जानत सकल जहान ॥"

इसलिए महाराज दशरथ ने प्रायश्चित करने का मन बनाया । उन्होंने महर्षि वशिष्ठ के पास अपना दूत भेजा, लेकिन संयोग से गुरु वशिष्ठ घर पर नहीं थे । उस समय उनका पुत्र घर पर था । उन्होंने उस दूत से पूछा, महाराजजी ने पिताजी को क्यों बुलाया है? दूत ने पूरी बात बता दी । पूरी घटना को सुन कर वशिष्ठजी के पुत्र ने कहा कि यह तो ब्रह्म-हत्या का साधारण सा दोष है । इसका निराकरण तो मैं भी कर सकता हूँ । इस कार्य के लिए पिताजी को जाने की क्या आवश्यकता है? मैं स्वयं चलकर महाराजजी को दोषमुक्त कर देता हूँ । वे दूत के साथ महाराज के पास आये । पूरे विधि-विधान के साथ ब्रह्म-हत्या दोष से मुक्ति के लिए उन्होंने हवन आदि कराया और 21 बार "राम" शब्द का उच्चारण करवाया । यह कार्य चल ही रहा था तभी वशिष्ठजी जब अपने घर आये तो उन्हें पता चला कि महाराज दशरथ उन्हें बुला रहे थे । वे शीघ्र महाराज दशरथ के पास पहुँचे । वशिष्ठजी ने पूरी घटना स्वयं देखी और अपने पुत्र से पूछा कि कि तुमने किस विधि का पालन किया? पुत्र ने सहर्ष यज्ञ की विधि का वर्णन कह सुनाया । विधि को सुनते ही वशिष्ठ क्रोधित हो गए । उन्होंने कहा कि तुमने यज्ञ तो ठीक किया, लेकिन इतने छोटे से दोष के लिए तुमने जो 21 बार "राम" शब्द का उच्चारण कराया, यह बहुत अनर्थ हुआ । इस दोष के लिए "राम" शब्द का एक बार उच्चारण करना ही काफी था । 21 बार "राम" शब्द का उच्चारण करवाकर तुमने राम की महिमा का अपमान किया है। तुमने बहुत बड़ा अपराध किया है । इस अपराध के लिए मैं तुम्हें श्राप देता हूँ कि तुम मलेच्छ बन जाओ । श्राप सुनकर पुत्र ने पिता का पैर पकड़कर

गिड़गिड़ाना शुरू कर दिया । वशिष्ठजी पुत्र की भक्ति देख प्रसन्न हुए और बोले कि जाओ तुम केवट बन जाओ । जब प्रभु श्रीराम यहाँ अवतार लेंगे और वनवास जाने के क्रम में गंगा तट पहुंचेंगे तो तुम उनके पैर धोकर अमृतपान करोगे, उसी दिन तुम्हें इस श्राप से मुक्ति मिल जाएगी ।

आज गंगातट पर श्रीराम और केवट का मिलन कोई सामान्य मिलन नहीं है । यह पूर्व जन्म के संस्कारों का आध्यात्मिक मिलन है । इसलिए यहाँ केवट किसी व्यापार की बात नहीं कर रहा है, केवल पाँव धोने की जिद कर रहा है । पाँव धोना और चरणामृत लेना कोई बहुत बड़ा भक्त ही कर सकता है । सामान्य पथिक से काई नाविक मजदूरी में पैसा मांगेगा, लेकिन केवट दूर से ही पुकार कर कहता है कि पहले मुझे तुम्हारा पैर धोना है । इससे एक बात और साफ होती है कि केवट यह भी जानना चाहता है कि क्या सचमुच राम के पैरों में इतनी शक्ति है कि अहल्या का उद्धार हो जाए? अगर ऐसा है तो श्रीराम अवश्य ही परमात्मा हैं । जिस परमात्मा की प्रतीक्षा वह वर्षों से कर रहा है । बगल में लक्ष्मण खड़े हैं, उन्हें कुछ पता नहीं चलता कि इन दोनों की बातचीत में कौन-सी आध्यात्मिक घटना घट रही है ।

आज प्राय: जो लोग भक्ति करते हैं, मन्दिरों में पूजा-अर्चना करते हैं, वे मन्दिरों में धन मांगते हैं, पुत्र और चुनाव में जीत तथा शत्रुओं के नाश का आशीर्वाद मांगते हैं । वे नहीं जानते कि परमात्मा से वे जो मांग रहे हैं यह सब कुछ उन्हें दु:ख देने वाला है । क्योंकि संसार तो स्वयं दु:ख का कारण है । इसलिए केवट कहता है कि- **हे प्रभु! तुमने तो मेरे जीवन से सारा लोभ मोह काम आदि को नष्ट कर दिया । संसार के प्रति जो मन में आकर्षण था, उसे तुमने नष्ट कर दिया । जिसके लिए आज संसार के लोग व्याकुल हैं । आज तो सभी माया के कारण मंदिरों में जाकर भगवान से केवल धन मांगते हैं । क्योंकि उनके मन में संसार के प्रति मोह है, आकर्षण और**

अनुग्रह है । तुमने तो उस आग्रह और अनुग्रह को ही तोड़ दिया । अनुग्रह को तोड़ा, अर्थात् तुमने तो मेरे मन में जो लालसा थी, उसे ही तोड़ दिया। अब मुझे कुछ नहीं चाहिए । हे राम! मेरे मन में जो विकार है, अवगुण है, उसे नष्ट कर दो और मुझे अपनी शरण में स्वीकार कर लो, ताकि मैं अपना शेष जीवन निष्काम कर्म करते हुए व्यतीत करूँ । इस संसार में रहना और संसार का भोग करना अनुचित नहीं है । अनुचित है उपभोग । हमें संसार का भोग नहीं उपयोग करना है । संसार में रहते हुए नैतिक कर्म करते रहें और अपना जीवन व्यतीत करते रहें, हमें वैसा ही आशीर्वाद दो ।

केवट एक भक्त है और वह हठपूर्वक प्रभु की भक्ति प्राप्त करना चाहता है । भक्त के कई स्वरूप होते हैं । एक ज्ञानमार्गी होता है जो ज्ञान के माध्यम से प्रभु को प्राप्त करना चाहता है जैसे कबीर । दूसरे प्रेम मार्गी होते हैं जो प्रेम के द्वारा प्रभु को पाना चाहता है । केवट में अनुरागपूर्ण प्रेमाभक्ति है, वह प्रभु से हठ करता है । हठ वही भक्त कर सकता है जो प्रभु को अपना समझता है, जैसे छोटे बच्चे अपनी माँ से हठ करते हैं । गोस्वामी तुलसीदास ने दास्य भक्ति से प्रभु को पाने का प्रयास किया । सूरदास साख्य भक्ति के प्रतीक थे । यहाँ केवट परमात्मा से जिद कर रहा है कि तुम मुझे अपनी भक्ति दो । पहले केवट श्रीराम से कहता है कि- **हे प्रभु! मैंने सुना है कि तुम्हारे पाँव के स्पर्श से पत्थर बनी अहल्या का उद्धार हो गया । तो मैं भी चाहता हूँ कि आप का पाँव स्पर्श करूँ ।** दरअसल केवट अज्ञानी नहीं है जो वह कहता है कि आपके पाँव में कोई जड़ी छिपी है । दरअसल जड़ी का अर्थ है कोई शक्ति, जिसका स्पर्श केवट को तभी हो सकता है जब वह प्रभु के पाँव धोये । आज भी हमारे समाज में गुरुजनों के पाँव धोने की परंपरा है । पहली बात तो यह है कि केवट कहना चाहता है कि अब परमात्मा हमारे द्वार तक आ गया है तो उसका

पाँव धोकर स्वागत करो । गांव में आज भी लोग एक लोटा पानी लेकर अतिथि को पाँव धुलाते हैं । केवट उसी परंपरा का निर्वाह कर रहा है । लेकिन साथ में वह चाहता है कि किसी भी बहाने मैं परमात्मा के पाँव धोऊँ ।

केवट एक भक्त है वह अपने परमात्मा को पूर्ण रूप से प्राप्त करना चाहता है । उसे केवल आशीर्वाद नहीं चाहिए, उसे प्रभु की पूर्णता की प्राप्ति चाहिए । इसलिए वह बार-बार प्रभु से कह रहा है कि मुझे अपना पाँव धोने दो । क्योंकि केवल पाँव धोना उसका उद्देश्य नहीं है । क्योंकि जैसे ही श्रीराम पाँव धोने की अनुमति देते हैं वैसे ही वह केवल पाँव नहीं धोता, वरन् काठ के कठौता में पाँव के धोवन को एकत्र करता है और उसे पहले स्वयं पीता है फिर पत्नी और बच्चों को पिलाता है, फिर वहाँ जितने भी केवट जाति के लोग थे, सबों को बुलाकर चरणामृत पिलाता है । इसलिए पाँव धोना मात्र उसका उद्देश्य नहीं है । उद्देश्य है प्रभु का चरण स्पर्श और चरणामृत पाना । इस बात को ऐसे और पुष्ट किया जा सकता है कि जब केवट कठौता में गंगा जल भर रहा होता है तो गंगा मइया भी कठौते में बैठ जाती है । इस लोभ से कि वह जिस विष्णु के पाँव से निकली थी, वही विष्णु आज राम बनकर गंगा तट पर आए हैं और कठौते में समाकर वह एक बार पुन: विष्णुरूपी राम के चरणों का स्पर्श कर ले। इससे स्पष्ट है कि केवट पूरी तरह जानता है कि जो व्यक्ति उसके तट पर खड़ा है वह परमात्मा है । इसलिए वह श्रीराम का पैर धोना चाहता है । सीता तो सब जान रही होती है, लेकिन लक्ष्मण केवट के इस हठ को समझ नहीं पाता। इसलिए वह क्रोध करता है । लक्ष्मण के क्रोध को केवट बर्दाश्त नहीं करता । क्योंकि केवट तो अपने परमात्मा से बात कर रहा है । लक्ष्मण का क्रोध उसे अच्छा नहीं लगता । केवट लक्ष्मण को जवाब देता है तुम भले ही मुझ तीर मार दो, लेकिन मैं अपने परमात्मा को हाथ से जाने नहीं दूंगा । कहते हैं-

बरु तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं ॥

अब केवट का नया भाव सामने आता है, पहले वह पाँव धोने की जिद कर रहा था, पर अब वह श्रीराम के पांवों को पखारने की जिद करने लगा है । धोने और पखारने में अंतर है । धोने का अर्थ है सीधे पानी डाल कर धो देना और पखारने का अर्थ पाँव को रगड़-रगड़ कर, साफ कर धोना । केवट की जिद के सामने प्रभु भी झुक जाते हैं । यहाँ भाव विह्वल होकर केवट प्रभु की प्रार्थना करता है-

प्रभु मेरो चरण पखारन देहु ।

जिस चरणन को पाई अहल्या, जीवन सफल करेहु ॥

प्रभु मेरो चरण ... ...

जिस चरणन को पाई पवनसुत, भक्त राज पद लेहु ॥

प्रभु मेरो चरण ... ...

धन बल पाया जनम गँवाया, छूटा प्रभु से नाता ।

पाप ताप संताप हमारा, सकल विघ्न हर लेहु ॥

प्रभु मेरो चरण ... ...

धन्य मातु कैकेई रानी, देव कार्य कर लेहु ।

बनी कलंकनी अपयश भोगी, सबको दर्शन देहु ॥

प्रभु मेरो चरण ... ...

इस गीत के माध्यम से केवट प्रभु की प्रार्थना करता है और कहता है कि- **प्रभु! इसी चरण को पाकर अहल्या इस भवसागर से तर गई । हनुमानजी जैसे अनेक भक्त, भरत जैसे भाई सबों ने अपने जीवन को सफल बनाया । आज मुझे मौका मिला है । इसलिए हे प्रभु ! मुझे आप अपने चरण पखारने दो ।**

सबसे महत्त्वपूर्ण बात समझ में आती है कि माता कैकेयी को सभी लोगों ने लांक्षित किया है कि उसने अपने पुत्र मोह में राम को वन भेजा, लेकिन यहाँ पहली बार केवट ने स्वीकार किया है कि कैकेयी ने देवताओं के कल्याण के लिए इतना बड़ा संकल्प लिया । इस तरह पहली नजर में लगता है कि केवट कोई साधारण नाविक नहीं है । वह कथा को जोड़ता है । पहले तो उसने बड़ी चालाकी से श्रीराम का पाँव मांगा, फिर कैकेयी की ओर संकेत करके देवताओं के कल्याण की बात बतायी । इस गीत में केवट ने कथा को आगे की ओर बढ़ाने का प्रयत्न किया है । केवट वहीं से राम को दैव कार्य के लिए प्रेरित करता है ।

यहाँ एक और महत्त्वपूर्ण बात सामने आती है कि श्रीराम ने दैव कार्य के लिए जन्म लिया, लेकिन श्रीराम को इस दैव कार्य के बदले में कितनी बड़ी कुर्बानी देनी पड़ी । गोस्वामीजी ने इसकी कोई चर्चा नहीं कि लेकिन सामान्य लोग यह आसानी से समझ लेते हैं कि जो व्यक्ति जनकल्याण करता है, उसे अपना सब कुछ लुटा देना पड़ता है । क्योंकि अपने स्वार्थ के लिए समाज सेवा करना अलग बात है, लेकिन जो लोग अपना सर्वस्व गंवाकर समाज का कल्याण करते हैं, वे व्यक्ति ही पूजा के योग्य होते हैं ।

हम देखते हैं कि आज के युग में हमारे देश में भी अनेक ऐसे लोग हुए जिन्होंने राष्ट्र हित में अपना बलिदान दिया, अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया क्योंकि कोई भी बड़ा काम त्याग से ही प्रारंभ होता है । गोस्वामीजी कहते हैं- हँसब ठठाई, फुलाउब गालू । अर्थात् जोर से हंसा भी जाए और गाल भी फुलाया जाए लेकिन दोनों संभव नहीं है ।

आज देश में अनेक बड़ी-बड़ी संस्थायें बनी हैं, लेकिन उन संस्थाओं की नींव किसी त्यागी पुरुष के कंधे पर ही खड़ी होती है । हमारे देश को स्वतंत्र कराने में यों तो अनेक नेताओं का योगदान रहा है, लेकिन राष्ट्रपिता महात्मा

गांधी का योगदान सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है । उन्होंने जो संघर्ष किया, अपने परिवार को संपन्न करने के लिए नहीं किया । इसलिए वे राष्ट्रपिता बन गये । मदन मोहन मालवीय ने भिक्षाटन करके काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की । इस तरह राष्ट्रहित में समर्पित होने वालों में अनेक महापुरुष शामिल हैं । किसी के त्याग पर ही किसी परिवार अथवा समाज का कल्याण होता है । घर-परिवार में भी अगर घर का मालिक त्याग वृत्ति वाला है, तो उस परिवार की तरक्की होती है । लेकिन जो लोग स्वार्थी होते हैं, वे न अपना कल्याण कर पाते हैं न घर-परिवार का ही कल्याण कर पाते हैं । इसलिए कहा जाता है कि जो भी व्यक्ति समाज या परिवार का नेतृत्व करता है, उसे पुत्र मोह अथवा परिवार मोह में नहीं बंधना चाहिए क्योंकि पुत्र मोह में फंसने वाले लोग इतिहास पुरुष नहीं बनते । इतिहास में उसी महापुरुष का नाम आता है जो समाज के लिए संघर्ष करता है ।

श्रीराम ने जीवन भर अपने लिए कुछ नहीं किया, देवताओं का कार्य पूरा करने के लिए माता-पिता, परिवार सबको छोड़ा । वे चाहते तो राजसुख भी प्राप्त करते रहते, लेकिन अगर वे राज-सुख प्राप्त करते तो वे भगवान् नहीं बन पाते । आज लोग छोटी-सी कुर्सी प्राप्त करने के लिए भी युद्ध करने लग जाते हैं । अपने परायों से लड़ते हैं । लेकिन राम ने क्षण मात्र में राजसुख का त्याग कर दिया । भरत जब उन्हें राज्य लौटाने जाते हैं तो भी वे राजसिंहासन का त्याग कर देते हैं । सच पूछा जाए तो भरत और राम के त्याग की कहानी इतिहास में अतुलनीय है । राजमुकुट का फुटबॉल पहली बार देखने को मिलता है । हमारे समाज में अगर राम-भरत और केवट के तरह और भी व्यक्ति हो जाएं तो समाज का कल्याण हो जाएगा ।

कितना बड़ा आश्चर्य होता है यह जानकर कि राम राजमुकुट का त्याग करते हैं । भरत भी उसे स्वीकार नहीं करता । भरत कहते हैं, राजमुकुट का

अधिकारी तो श्रीराम हैं । अगर उन्हें दैव कार्य के लिए वन में जाना है, तो जाए । मैं उनके राज्य का प्रतिनिधि बनकर देखभाल कर दूंगा क्योंकि उस पर मेरा कोई अधिकार नहीं है । इसलिए राम की खड़ाऊं लेकर वे लौटते हैं । पहली बार एक बात मेरे मन में आयी है कि राम के राज्य का संचालन का भरोसा लेकर भरत लौटते हैं । शायद यहीं से न्यास (Trust) की प्रथा का प्रचलन हुआ होगा । भरत ने राम का ट्रस्टी बनकर राज्य संचालन किया । इस तरह कई पात्र ऐसे हैं जो अपनी-अपनी भूमिका के लिए महत्त्वपूर्ण हैं ।

केवट ने प्रभु राम को पहले गीत में ही प्रभु कहकर पुकारा है । अब दूसरे गीत में "केवट विनती करे पड़े पईयां ।" केवट कहता है कि- **हे प्रभु! अगर आपकी भक्ति प्राप्त करने के लिए भईया लक्ष्मण के तीर से मरना भी पड़े तो चिन्ता नहीं है । इसलिए मेरी घरवाली भी पीछे खड़ी है । वह भी आपके पाँव छूने के लिए लालायित है ।** घरवाली की बात सुनकर श्रीराम ने केवट से मजाक किया कि केवट घरवाली से इतना डरते क्यों हो? अगर तुम्हें लगता है कि मेरे स्पर्श से तुम्हारी नाव स्त्री बन जाएगी तो इसमें क्या बुरा है? तुम दो स्त्री रख लेना ।

श्रीराम के मजाक को सुनकर केवट ने कहा- हे प्रभु, मुझे महाराज दशरथ की कहानी पता है । दशरथ की तीन रानियां थीं, उनमें से एक कैकेयी के कारण ही श्रीराम को वन जाना पड़ा और इसी शोक के कारण राजा दशरथ की मृत्यु भी हुई । केवट कहता है मेरे पास खाने के लिए अन्न नहीं है, जिसके घर में एक चटाई भी न हो, वह दो-दो पत्नियों को रखकर मिठाई कैसे खा सकता है ।

इस बात से पता चलता है कि केवट भी केवल समर्पण वाली भक्ति नहीं करता, श्रीराम से तकरार भी करता है । मजाक भी करता है और हठ भी करता है । केवट का दूसरा भजन आइए सब मिल कर गाएं –

गीत

केवट विनती करे पड़े पईंयाँ । पद पखारन दे हे रघुरईया ।
तीर मारे भले लखन भईया । चढ़ न पाओगे तुम मेरी नइया ॥
जबसे आए हो चिन्ता बढ़ी है । मेरी घरवाली पीछे खड़ी है ।
तेरे पाँव में कैसी जड़ी है । बनकर पत्थर से नारी खड़ी है ॥
तुम हो जादू के कैसे खेलैया । पद पखारन दे हे रघुरईया ।
केवट विनती करे ... ...!
प्रभु ने ज्योंही कहा पद पखारो । पद में मूरि कहाँ है निहारो ॥
बैठी जल में है गंगा मईया । पद पखारन दे हे रघुरईया ।
केवट विनती करे ... ...!
प्रभु ने हँसकर कहा- क्या बुरा है । घरवाली से इतना डरा है ।
सुन कर केवट ने प्रभु को बताया । राजा दशरथ की हालत सुनाया ॥
जिसके घर में न हो एक चटईया । कैसे खाए वो दो-दो मिठईया ।
केवट विनती करे ... ...!
'सुदर्शन' कहे हे केवट भईया । जल लाओ धरो इनका पईंयाँ ॥
कब तक विनती तुम करते रहोगे । साँस कब तक तुम गिनते रहोगे ॥
केवट विनती करे ... ...!

केवट की प्रेम-भक्ति देखकर प्रभु श्रीराम द्रवित भी हो रहे हैं और वे बार-बार मुस्कुरा भी रहे हैं साथ ही केवट की भक्ति के रहस्य को समझ भी रहे हैं । कितनी चालाकी से केवट प्रभु की भक्ति मांग रहा है । उसकी भक्ति में कोई छल-कपट नहीं है । उसकी भक्ति में लाड़-प्यार है । इस प्रेम-भक्ति को देखकर प्रभु जैसे भींग से गए हों । राम केवट के तर्क सुनकर मुस्कुरा रहे हैं ।

केवट ने यह भी नहीं सोचा कि महाराज दशरथ की तीन रानियों की बात सुनकर राम कहीं बुरा न मान जाएं । वह जानता है कि भक्त और भगवान में ऐसा चलता है, इसलिए केवट की चोट को भगवान राम बर्दाश्त कर लेते हैं ।

यहाँ भाव है कि जिस राम को पाने के लिए अगम-निगम मुनि संत जन्म-जन्म तक तप करते हैं, फिर भी उन्हें प्रभु के दर्शन नहीं होते, आज सौभाग्य से केवट के घाट पर साक्षात् श्रीराम खड़े हैं और केवट उनके पैर धोने के लिए मचल रहा है । यह भक्त का अनूठा भाव है । आइए, भक्त केवट के प्रेम-भाव को इस संगीत में देखें –

गीत

केवट के देख पिरितिया हे,
राम मने मुस्काये ।
धो-धो के पोंछे चरणियाँ हे,
राम मने मुस्काये ॥

केवट के देख पिरितिया हे ... ...

अगम-निगम मुनि नित-नित ध्याये,
देव दनुज सिद्ध समझ न पाये ।
सोई प्रभु केवट घर चलि आए,
राम मने मुस्काये ॥

केवट के देख पिरितिया हे ... ...

जनम-जनम से आस लगाये,
यह जीवन कहीं चूक न जाये ।
धो-धो के पोंछे चरणियाँ हे,
राम मने मुस्काये ॥

केवट के देख पिरितिया हे ... ...

चरण धोई चरणामृत पीये,
कहे 'सुदर्शन' केवट जीये ।
अंखवा में भर-भर पनिया हे,
राम मने मुस्काये ॥

केवट के देख पिरितिया हे ... ...

मैंने सुना है कि इसी तरह की हठवादी भक्ति स्वामी रामकृष्ण परमहंस भी करते थे । काली माता से वे झगड़ते भी थे, हठ भी करते थे । एक दिन तो रामकृष्णजी प्रसाद का भोग लगाने गए तो उन्होंने कहा कि माता! लो भोजन कर लो । स्वामी रामकृष्ण इतने निश्छल थे कि उन्हें क्या पता कि भोजन माता को समर्पित किया जाता है, वे भोजन खाती नहीं हैं । लेकिन रामकृष्ण ने हठ करना शुरू किया । तुम्हें खाना पड़ेगा । माता ने जब उनकी बात नहीं मानी । तो रामकृष्ण रूठ कर जाने लगे । काली मईया ने हाथ पकड़ लिया । उन्हें पत्थर की मूर्ति में से निकलकर बाहर आना पड़ा और रामकृष्ण परमहंस के सामने भोजन करना पड़ा । यही तो निश्छल भक्ति है ।

केवट के हठ को देखकर देव-दनुज केवट की भक्ति से ईर्ष्या कर रहे हैं, क्योंकि परमात्मा स्वयं भक्त को आशीर्वाद देने उनके घर पहुँच गए हैं । इसलिए केवट राम के चरणों को बार-बार पखार रहा है, धो रहा है, चूम रहा है, सर में लगा रहा है । यह सब केवट की भक्ति है । कठौता में गंगा जल लाने गया तो गंगाजी कठौता में बैठ गईं । वह भी प्रभु का चरण स्पर्श कर रही है । यह बहुत अद्‌भुत नजारा है । आकाश से देवगण केवट की भक्ति को प्रणाम कर रहे हैं । यहाँ एक और महत्त्वपूर्ण घटना घटती है, जिसे बहुत कम लोग अनुभव कर पाते हैं । केवट पाँव पखार रहा है । पानी से धोने के बाद अपने गमछा से उसे पोछता है । लेकिन थोड़ी देर में वह पाँव फिर से भींग जाता है

क्योंकि केवट की आंखों से जो आंसू बह रहे हैं, वे आंसू प्रभु राम के पावों पर गिड़कर उन्हें फिर भिंगो दे रहे हैं । केवट अपने गमछे से उनके पाँव का पानी पोंछता जाता है और वे पांव फिर से केवट की अश्रु धारा से भींग जाते हैं । यह मोहक दृश्य देखकर राम मुस्कुराते हैं । "अंखवा में भर-भर पनिया हे" प्रेम से विगलित होकर केवट पाँव पखार रहा है । यह भक्ति की पराकाष्ठा है । इस भक्ति को देखकर श्रीराम मोहित हो जाते हैं । केवट को पकड़कर गले लगाते हुए कहते हैं कि केवट! तुमने अपनी भक्ति से आज सब कुछ प्राप्त कर लिया । मैं तुम्हें अपना अक्षय आशीर्वाद देता हूँ, फिर श्रीराम ने केवट को गले से लगा लिया ।

इस दृश्य को देखकर मेरे मन में यह भाव आता है कि क्या राम सामन्तवादी थे, राजकुमार थे, अगर राजा के पुत्र थे तो एक साधारण केवट को गले क्यों लगा रहे हैं? दरअसल श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं । वे न राजा हैं और न राजकुमार हैं । वे तो दीनदयाल हैं, गरीबों के मसीहा हैं, पहली बार राम ने जात-पात, ऊँच-नीच, धनी-गरीब की दीवार को यहाँ तोड़ा है । यह उनका आदर्श स्वरूप है । तभी एक साधारण केवट को मित्रवत् गले लगा रहे हैं । श्रीराम ने कहा कि केवट मेंने तुम्हें सब कुछ दे दिया । अगर और कुछ चाहिए तो बोलो । यहाँ केवट का विवेक देखिए । केवट कहता है कि- **प्रभु मुझे कुछ भी नहीं चाहिए । तुमने मेरा कल्याण तो कर दिया, अब मेरे सखा, कुटुम्ब और पूर्वजों का भी कल्याण कर दो ।** मुझे लगता है केवट द्वारा पूर्वजों का जिक्र महर्षि वशिष्ठ की ओर संकेत कराता है । केवट कहना चाहता है कि उनके पिता वशिष्ठजी पर भी उनकी कृपा दृष्टि बनी रहे । श्रीराम ने सखा सहित पूर्वजों का भी उद्धार कर दिया । फिर केवट ने कहा कि प्रभु आएं, नाव पर बैठें । नाव पर राम, सीता और लक्ष्मण बैठते हैं और केवट नाव खेता है । लगता है आगे परमात्मा खड़े हैं बीच में माया रूपी सीता खड़ी है । पीछे जीव

रूपी लक्ष्मण खड़े हैं । इसका अर्थ है जीव परमात्मा तक तभी पहुँच सकता है, जब वह माया को वश में कर ले । जिस दिन जीव माया पर विजय प्राप्त कर लेगा, उस दिन उसे परमात्मा मिल जाएंगे और तभी तो केवट की नाव भवसागर पार करा रही है, उस पर चढ़कर जीव भवसागर पार कर जाएगा । परमात्मा भवसागर तभी पार कराता है जब जीव माया को जीत ले, इस तरह केवट उन सबों को लेकर गंगा के उस पार चला जा रहा है –

उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता ।

सीय रामु गृह लखन समेता ॥

अब तीनों ही गंगा के उस पार खड़े हुए हैं । अब श्रीराम को लगा कि केवट तो पहले ही कह चुका है कि नाव खेना मेरी जीविका है । **"नहि जानउँ कछु अउर कबारू ।"** कबारू, मतलब व्यापार । वह कह चुका है कि मेरी जीविका का साधन केवल नाव खेना ही है और कुछ मुझे नहीं आता । श्रीराम सोचने लगे अब तो अवश्य ही इसको कुछ मजदूरी मिलनी चाहिए । लेकिन क्या दूँ? पास में कुछ है ही नहीं । वल्कल वस्त्र में कुछ रखा भी नहीं जा सकता। श्रीराम बड़े धर्म संकट में पड़ गए । **"प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा ॥"** श्रीराम सोचने लगे इसे क्या दूँ? फिर भी राम ने पूछा केवट, मैं तुम्हें क्या दे सकता हूँ? यह सुन केवट की आँखों में आंसू भर आए ।

प्रभु ने ज्योंहि कहा- तुम क्या लोगे,

केवट पईंया पड़े अब क्या दोगे ।

केवट कहता है कि– **हे प्रभु! दुनिया में जो किसी को नहीं मिला है, तुमने वह सब मुझे दे दिया । तुमने मेरे मन से आग्रह, अनुग्रह, लोभ-मोह को नष्ट कर दिया । इससे अधिक तुम मुझे क्या दोगे? तुमने तो अपना चरण तक मुझे दे दिया । अब इस चरण से मैं अपना**

आ-चरण = आचरण ठीक करूंगा । इस चरण को पाते ही मेरा आचरण ठीक हो गया । यह बात हो ही रही थी कि सीताजी समझ गईं कि राम धर्मसंकट में पड़े हुए हैं । वे कुछ देना चाहते हैं, लेकिन उनके पास तो कुछ है ही नहीं । उन्होनें तुरन्त अपने हाथ की अंगूठी (मुद्रिका) श्रीराम को दे दी । फिर प्रभु ने जैसे वह मुद्रिका केवट को देनी चाही, केवट ने इतना ही कहा कि-

फिरती बार मोहि जो देबा । सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा ॥

केवट का मानना था कि श्रीराम तो स्वयं संघर्ष करने जा रहे हैं, इनसे इस समय कुछ लेना ठीक नहीं है । श्रीराम ने मुद्रिका वापस अपने हाथ में रख ली, यही मुद्रिका सीता-हरण के पश्चात् श्रीराम हनुमान के द्वारा लंका भेजते हैं ।

❀❀❀

केवट की प्रार्थना और श्रीराम का उपदेश

हे प्रभु दीनदयाल अनुग्रह तोड़ बड़ा उपकार किया ।
भव बन्धन से तोड़ा मुझको, कई जन्मों का उद्धार किया ॥
हे राम! अहं के कारण ही, ऋषि कुल से मैं परित्यक्त हुआ ।
ऋषि कुल से अध पतन से ही, केवट घर में उत्पन्न हुआ ॥
अज्ञान को ज्ञान समझता था, संसार समझ नहीं पाता था ।
ज्ञानी वशिष्ठ के ब्रह्म तत्त्व का, अर्थ समझ नहीं आता था ॥
काम, क्रोध, अज्ञान के कारण, जीवन में पशुता आई ।
इस पशुता को प्रभु नष्ट करो, दर्शन कर आँखें भर आई ॥
जिस क्षण तट पै देखा तुझको, पल भर में दिव्य प्रकाश मिला ।
अब टूट चुका बन्धन सारा, जीवन को सरल सुवास मिला ॥
हे दीन बंधु अब क्या दोगे, पद रज मैंने जब पान किया ।
मधुकर सौरभ को पीकर क्या, सूखी लकड़ी का पान किया ॥
यह जीव सृष्टि वैभव सारा, अज्ञान तिमिर की छाया है ।
जो दृश्य मोह का कारण है, ममता वस हमें भरमाया है ॥
जबतक मैं तुम से दूर रहा, संसार को सत्य समझता था ।
अब बोध हुआ पद-रज पाकर, आग्रह-विग्रह का नाता था ॥
जब ब्रह्म भक्ति से मिलता है, सब भाव स्वयं कट जाता है ।
जीवन का सत्य हो आँखों में, अज्ञान स्वयं गिर जाता है ॥

आँखों में ब्रह्म खड़ा जब हो, तब चाह स्वयं मर जाती है ।
सागर के सम्मुख जब हम हों, सब प्यास स्वयं मिट जाती है ।।
हम जीवों में तुम अंशी हो, हर प्राण तुम्हीं से चलता है ।
धन, वैभव, सुत, दारा, भ्राता, माया वस सब यह नाता है ।।
तन, मन, धन, प्रभु सब तेरा है, माया से सघन अंधेरा है ।
प्रभु ने केवट को समझाया, परिवार ही एक सहारा है ।।
सुनकर केवट ने हाथ जोड़, श्री चरणों को प्रणाम किया ।
बोला प्रभु से हे जगत्पति! तुमने ही जग विस्तार किया ।।
यह धन वैभव नाता बंधन, सब मोह तमिस्रा सारी है ।
कैसे जीवन को पार करूँ, संसार धर्म अति भारी है ।।
धन के अधीन है नर-नारी, धन दास नहीं कभी बनता है ।
इस धन के खातिर मातु-पिता, बान्धव, शत्रु बन जाता है ।।
हे नाथ मुझे वर दो ऐसा, जीवन का अर्थ समझ पाऊँ ।
तोड़ूँ जग के सब बंधन को, संशय विग्रह से बच जाऊँ ।।
अपनी ही करनी के कारण, मानव दानव बन जाता है ।
निज कर्मों से ही शिला-लेख, जीवन की दिशा बताता है ।।
अब नहीं चाहिए धन वैभव, प्रभु चरणों में स्वीकार करो ।
ताकि टूटे अज्ञान तिमिर, इस जीवन का निस्तार करो ।।
हर जीव लोभ के कारण ही, मंदिर से भी धन लाता है ।
जब स्वयं प्रभु मेरे घर आये, मधु छोड़ कीट कोई खाता है ।।
करुणा करके करुणानिधान, अघ कर्म पूर्व के नष्ट करो ।
आशीष मुझे दो हे दाता, इन आँखों में नव ज्योति भरो ।।

जिस रूप का दर्शन करने को, सुधि संत योग में लीन हुए ।
वह रूप आज इन आँखों के, प्रत्यक्ष रूप में प्रकट हुए ।।
मोती को छोड़ समुन्दर में, घोंघा लेना कोई अर्थ नहीं ।
इस दिव्य ज्ञान के बदले में, वैभव पाना कोई अर्थ नहीं ।।
जो ब्रह्म अनादि अगोचर है, वह द्वार हमारे आया है ।
अपने चरणों की धूलि से, इस तन को शुचि बनाया है ।।
तुम कहते हो माँगूं तुमसे, वरदान एक प्रभु दे देना ।
जब घाट तुम्हारे मैं आऊँ, मेरी नैया पार लगा देना ।।
मैं गंगा तट का केवट हूँ, तुम भवसागर के केवट हो ।
दोनों का मान बराबर है, इस हेतु तू बंधु हमारे हो ।।
प्रभु ने केवट को गले लगा, करुणा का आशीर्वाद दिया ।
तुमने केवट निज भक्ति से, इस जगति का उद्धार किया ।।
हे भक्त शिरोमणि हे केवट, तप योग ज्ञान सब आधा है ।
भक्ति तो आत्म समर्पण है, षट्कर्म आदि सब बाधा है ।।
जिस तन में भक्ति उपजती है, कण-कण प्रेमी बन जाता है ।
जो जी भर प्रेम को पीता है, उसमें विभेद मिट जाता है ।।
जीवन से मत भागो केवट, जीवन प्रभु तक पहुँचाता है ।
तुम त्यागपूर्ण जीवन कर लो, दुःख कष्ट स्वयं मिट जाता है ।।
संग्रह से दुःख बढ़ जाता है, परित्याग दुःख को खाता है ।
निष्काम कर्मयोगी बनकर, जो जीता है सुख पाता है ।।
इस गंगा तट पर हे केवट, मैं दिव्य ज्ञान तुम्हें देता हूँ ।
अनुरागपूर्ण जीवन जीना, संकट मन का हर लेता हूँ ।।

जब तक जीवन जीना तुम, षड्दोष विकृति से बचे रहना ।
यह जीवन है परिताप नहीं, नैतिक कर्मों से मत हटना ।।
केवट ने पूछा हे रघुवर, दुःख कष्ट जीव क्यों पाता है ।
कोई राजमहल में पलता है, कोई सड़कों पे सो जाता है ।।
रघुवर बोले, केवट सुन लो, सब पूर्वजन्म का नाता है ।
संचित, प्रारब्ध, क्रियमान कर्म, मानव का भाग्य बनाता है ।।
जो राज महल में रहते हैं, संचित कर्मों को पाते हैं ।
क्रियमाण कर्म के फल से ही, आगे का जीवन पाते हैं ।।
हे प्रिय सखा केवट सुन लो, यह प्रकृति स्वयं अनुशासन है ।
दिव्यलोक से भूतल तक, अस्तित्व सृष्टि का शासन है ।।
एक पत्ता भी गिरता द्रुम से, उसका अस्तित्व नियोजित है ।
हम आज खड़े गंगा तट पै, यह भी घटना आयोजित है ।।
यह जीव सृष्टि मृगतृष्णा है, मृगावत् सब भाग रहे ।
क्षण भर की भोग वितृष्णा में, सब अपने को ही काट रहे ।।
तेरी भक्ति में नहीं छल केवट, ऐसी भक्ति मुझे भाती है ।
इसलिए आज गंगा तट पै, तेरी भक्ति मुझे सुहाती है ।।
शाश्वत है सत्य सदा जग में, दृश्यमान जगत् सब धोखा है ।
यह भाव सदा मन में रखना, यह जीवन बड़ा अनोखा है ।।
नर रूप में आकर हे केवट, देवों का कार्य निभाना है ।
इस रूप में संकट सहकर भी, इस देश को स्वर्ग बनाना है ।।
केवट बोला, हे रघुनंदन, यह जगत् सत्य क्यों लगता है ।
रघुवर बोले सपना में, कैसे सब सच्चा लगता है ।।

जबतक जाग्रत बन जीते हो, जगती का सत्य झलकता है ।
संशय, सपना, अज्ञान लोक में, सत्य नहीं चमकता है ।।
तुम में जो ज्ञान पिपासा है, यह गुण संतों में सुलभ नहीं ।
इसलिए तुम्हें बतलाता हूँ, निश्छल को यह सब अलभ नहीं ।।
हे प्रभु राम दया करके, यह ज्ञान मुझे प्रदान करो ।
किस हेतु जगत् में उच्च-नीच, धनहीन, धनी का ध्यान करो ।।
प्रभु बोले, ये है दृष्टि दोष, जो रस्सी को सांप समझते हो ।
माया बंधन के कारण ही, सपना को सत्य समझते हो ।।
संचित कर्मों के कारण ही, वर्तमान रूप नर पाता है ।
कीचड़ में पंकज पलता है, शंभु उर विषधर रहता है ।।
पिछले जन्मों के पुण्यों से, तेरे मन यह सद्भाव उठा ।
इस भाव के कारण ही तुम अब, समझोगे क्या सच्चा, झूठा ।।
तन के सुख-दुःख में मत पड़ना, मन में तुम दिव्य प्रकाश भरो ।
संतों सम निर्धन बनकर भी, उस परमानन्द का ध्यान करो ।।
है आँखों का ये खेल विपर्यय, हानि-लाभ, जीना-मरना ।
जैसे बादल से सागर तक, नहीं होता जल का भी मरना ।।
इस सृष्टि चक्र के कारण ही, सब रूप अरूप का खेला है ।
घूमती चक्की को देख बता, है कहाँ आदि, बस मेला है ।।
यह दिवा रात्रि, जनना-मरना, यह चक्र निरंतर चलता है ।
जिस मन में ज्ञान उपजता है, उसे तत्व ज्ञान हो जाता है ।।
जिस सुख के लिए ललकते हो, वह सुख तो क्षणिक व छोटा है ।
उस परमानन्द की बात करो, जिसके समझ सब खोटा है ।।

यह काम, वासना, धन-वैभव, वह क्षणिक भास सुख देता है ।
आओ आनंद के लोक जहाँ, सुख परम शान्ति का होता है ।।
जब ज्ञान रवि मन में उठता, अज्ञान तमस मिट जाता है ।
मन में विकार के मिटते ही, संशय-विभ्रम मिट जाता है ।।
यह लोभ, मोह, जड़ता बंधन, अज्ञानी को ही होता है ।
माया के बंधन में पड़कर, नर पशु रूप बन जाता है ।।
मानव अपने सत् कर्मों से, वह दिव्य पुरुष बन सकता है ।
दृष्टि को महज बदलने से, सत्-असत् भेद कर सकता है ।।
हे राम! आप अविनाशी हो, घट-घट के उर में वासी हो ।
इस तन में ज्योति प्रकाश भरो, इस जीवन का विन्यास करो ।।
तुम तोड़ चुके ममता बन्धन, तन मन मेरा निष्पाप हुआ ।
तेरे स्वरूप के दर्शन से, कई जन्मों का तम नाश हुआ ।।
आशीष मुझे दो- लो प्रणाम, हे राम! तुम्हें शत शत प्रणाम ।
हो जीवन मेरा मुक्त काम, सर्वार्थ सिद्धि तुम लो प्रणाम ।।

गीत

हे केवट, फूलों का सौरभ जीवन है, झरना का कलरव जीवन है ।
भंवरों का गुंजन जीवन है, कोयल का नर्तन जीवन है ।।
लहरों का घर्षण जीवन है, मेघों का गर्जन जीवन है ।
प्रेमी का मिलना जीवन है, संगीत ओठ पै जीवन है ।।

यहाँ एक बात जानने योग्य है कि संसार में तीन ही मणि हैं, एक है रघुकुल मणि श्रीराम । दूसरा है कर मणि, वही मुद्रिका और तीसरा है चूड़ामणि। कहते हैं तीन में से दो मणि जहाँ रहेगी, वहाँ विजय होना सुनिश्चित है ।

सीताजी को पता था कि वन में क्या घटना घटने वाली है । इसलिए उन्होंने कर मणि तो अपने पास रख लिया और चूड़ामणि राम को वापस भिजवा दिया । इस तरह श्रीराम के पास दो मणि एक साथ रहेगी और इससे श्रीराम को विजय मिलेगी । इसी मणि को जब श्रीराम ने लंका भेजा तो सीताजी ने सोचा कि यह तो गड़बड़ हो गया । अब लंका में सीताजी की चूड़ामणि और हनुमानजी द्वारा लाई गई कर मणि, कुल दो मणि हो गई । इसलिए सीताजी तुरंत अपना चूड़ामणि हनुमानजी के द्वारा राम के पास भेज दी, ताकि श्रीराम के पास दो मणि रहे ।

केवट ने प्रभु श्रीराम को बार-बार अपनी भक्ति की साख देकर कहा कि- **हे प्रभु! मैं तो अज्ञानी हूँ । मुझे आप धन वैभव पुत्र और पत्नी के मोहपाश में क्यों बांधना चाह रहे हैं । आप तो जनकल्याण के लिए निकले हैं । आप मुझे ऐसा दिव्य ज्ञान प्रदान करें कि मैं भव-बंधन से मुक्त हो जाऊँ । हे प्रभु! आप मुझे गंगा पार करने के बदले में धन दे रहे हैं। मेरी प्रार्थना है कि मैंने आज आपको गंगा पार कराया है, जब मैं आपके घाट पर आऊँगा तो आप भी मुझे पार लगा देना ।** केवट की भक्तिपूर्ण बातें सुनकर श्रीराम ने कहा- केवट! इस संसार से मुक्त होने के लिए वैराग्यपूर्ण जीवन जीना पड़ता है । आज मैं तुम्हें दिव्य ज्ञान प्रदान करता हूँ । जब तक तुम्हें मेरे आशीर्वाद की दृष्टि नहीं मिलेगी तुम मेरे मूल स्वरूप को पहचान नहीं सकोगे । क्योंकि आंखों की अपनी एक सीमा होती है । उसके पार वह नहीं देख पाती । इसलिए मैं तुम्हें अपना आशीर्वाद देता हूँ कि तुम्हारी आँखों पर काम, क्रोध, अभिमान, मोह का जो पर्दा चढ़ा हुआ है, वह हट जाए । ज्योंही माया का बंधन तुम्हारे आँखों से हटेगा तुम समझ लोगे कि तुम हमारे ही स्वरूप हो । हममें-तुममें कोई अन्तर नहीं है । जीव और ब्रह्म में केवल माया के पर्दा के कारण अन्तर दिखता है । इसलिए केवट तुम मेरा ध्यान करो । प्रभु की बातें

सुनकर केवट हाथ जोड़कर घुटने के बल बैठ गया और श्रीराम की ओर देखने लगा और उसने पूछा- **हे प्रभु! मैंने सुना है कि ज्ञान का दीपक जलने लगता है तो सारा मोह-बंधन, पुत्र-पत्नी-परिवार का बंधन टूट जाता है। अगर मैं ज्ञान को उपलब्ध हो जाऊँ और मन में वैराग्य उत्पन्न हो जाए तो मेरे परिवार का पालन-पोषण कैसे होगा ? हे प्रभु ! मैं अब बहुत ही द्वन्द्व में पड़ गया हूँ। एक तरफ परिवार पुकार रहा है। दूसरी तरफ जब से तुम्हें देखा है मन में एक अजीब क्रांति मची हुई है। क्योंकि जब तुम मिल गए तो सारी कामनायें गिर गईं अब कुछ पाने की इच्छा नहीं है। अमृत चखने के बाद नीम का पत्ता कौन खा सकता है। जब तुम्हें पाकर भी मेरा मन अतृप्त रह जाए तो क्या दुनिया को पाकर मैं तृप्त हो सकूंगा। अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे ऐसा ज्ञान दो कि मैं सत्य-असत्य को पहचान लूँ ।**

भ॰

प्रभु ने ज्योंहि कहा- तुम क्या लोगे,
केवट पईंया पड़े अब क्या दोगे।

जबसे देखा है तुमको, नशा छा गया,
अब क्या दोगे तुम, सबकुछ मैं पा गया।

जिसको पाने की खातिर, जनम बीत गया,
जब तुम मिल गये, बाकी क्या रह गया।

तेरे चरणों को पाकर गर जी न भरा,
नश्वर दुनिया को पाकर कोई बन गया।

जब से तुम मिल गये, मुझको सब मिल गया,
अब क्या दोगे तुम, सब कुछ मैं पा गया।

मैं केवट हूँ गंगा उतारा तुम्हें,
भवसागर उतारोगे अब तुम हमें।

घरवाली और बच्चे तो सब मिल गया,
तेरे चरणों की छाया से मैं चूक गया।

दूर चरणों से ''सुदर्शन'' को क्यों कर दिया,
अपने भक्तों को संकट में क्यों धर दिया।

केवट की बात सुनकर श्रीराम ने कहा- केवट! इसलिए मैं तुम्हें दिव्य दृष्टि देना चाहता हूँ। एक क्षण में तुम सम्पूर्ण ज्ञान को प्राप्त कर लोगे। अब तक तुम्हारी आंखों पर जो पर्दा है, जिससे तुम पुत्र और पत्नी के मोह में पड़े हो, दरअसल, यह शरीर का नाता है। जब तक शरीर है, यह नाता खड़ा है। शरीर के नष्ट होते ही सारे नाते नष्ट हो जाते हैं। यह सब क्षणिक बंधन है, तुम इस संसार में इस पृथ्वी लोक पर न जाने कितने लाख वर्षों के लिए आए हो। तुम्हें भिन्न-भिन्न योनि में अपने कर्मानुसार फल भोगना पड़ता है। 84 लाख योनियों में तुम्हें घूमना है। अभी तुम्हें इस जीवन से मोह हो रहा है। तुम्हें पुत्र-पत्नी का मोह सता रहा है। लेकिन इसके पहले भी कई योनियों में तुहें पुत्र और पत्नी मिली, तुम उनसे प्रेम करते थे। तुम्हारा शरीर बदल गया। अब सम्बन्ध भी बदल गए। पता नहीं अब तक कितनी बार तुम किसी के पिता, पुत्र भाई बनते रहे हो। लेकिन आज तुम्हें कुछ भी याद नहीं है। क्योंकि स्थूल शरीर की कोई भी घटना शरीर के बाद याद नहीं रहती। लेकिन तुम्हारे सूक्ष्म शरीर में पिछले समस्त जन्मों की कथा अंकित है। सूक्ष्म शरीर तुम्हारे कर्मों का लेखा-जोखा करता है और उसी से कर्मफल निर्धारित होता है। इस जन्म में पाप करोगे तो हर हालत में तुम्हें पाप का फल भोगना पड़ेगा। पुण्य करोगे तो पुण्य के प्रभाव से तुम्हारा पाप जरूर कटेगा। लेकिन इसका निर्णय तब होता है जब दोनों का हिसाब बराबर किया जाए। इस शरीर में जो तुम कर्म करते हो उसे क्रियमाण

कर्म कहते हैं । मेरे प्रिय केवट! तुम संसार में रहो, लेकिन जिस प्रकार कमल का फूल जल में रहते हुए भी जल से लिप्त नहीं होता, उसी प्रकार तुम्हें संसार में रहते हुए संसार के मोह बंधन में लिप्त नहीं होना चाहिए । क्योंकि यहाँ तुम्हारा कुछ भी अपना नहीं है । यह घर-परिवार कुछ भी तुम्हारा नहीं है । तुम तो नाटक के पात्र की तरह यहाँ नाटक खेल रहे हो । प्रत्येक व्यक्ति इस संसार में नाटक खेलने आता है और खेलकर चला जाता है । नाटक उसका वास्तविक स्वरूप नहीं होता है ।

केवट ने पूछा- **हे प्रभु! मैं आपके चरण पखारना चाहता हूँ । क्योंकि मैंने संतों से सुना है कि परमात्मा और गुरु के चरण स्पर्श करने से पुण्य होता है। साथ ही चरणामृतपान करने से अद्‌भुत फल प्राप्त होता है । कृपया मुझे बताएं कि इसका रहस्य क्या है?**

प्रश्न सुनकर श्रीराम ने कहा- केवट यह जीवन का आध्यात्मिक ज्ञान है। दरअसल हमारा जीवन शक्ति पुंज है और शक्ति का अर्थ होता है ऊर्जा । और ऊर्जा शक्ति का ही घनीभूत रूप है । यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ऊर्जा है । सच पूछो तो जो संसार तुम्हें दिख रहा है वह भी ऊर्जा का घनीभूत रूप है और यह भी सत्य है कि कोई भी पदार्थ शाश्वत नहीं है । क्योंकि वह नश्वर है । नष्ट हो जाने वाला है । ऊर्जा से ही पदार्थ बनता है और पदार्थ एक दिन नष्ट होकर फिर ऊर्जा बन जाता है । हमारा मानव शरीर ऊर्जा का घनीभूत रूप है । हम ऊर्जा से बने हुए हैं । हमारे शरीर में ताप, ध्वनि, प्रकाश, विद्युत्, चुम्बक और घर्षण की प्रधानता है । इसी की शक्ति से शरीर चलता है । हमारे शरीर का चुम्बक जैव चुम्बक है । जो संत पुरुष होते हैं उनके पास जो ऊर्जा की संग्रहित शक्ति है । उसमें आकर्षित करने की भीषण शक्ति होती है । तुम्हारे शरीर में भी चुम्बक है, लेकिन उसमें उतनी शक्ति नहीं है । क्योंकि तुमने साधना नहीं की है । साधना से, तप से, संयम से और एकाग्र निष्ठा से शरीर में प्रबल शक्ति पैदा होती है ।

बड़े संत लोग इसी शक्ति को धारण करते हैं । इसलिए गुरु को शक्तिशाली माना जाता है ।

केवट जब तुम अपने गुरु अथवा किसी संत पुरुष को चरण स्पर्श कर प्रणाम करते हो तो तुम्हारे शरीर का छोटा चुम्बक गुरु के शरीर के विशाल चुम्बक से टकराता है और बड़े वेग से गुरु के शरीर का प्रवाह तुम्हारे शरीर की ओर होने लगता है । गुरु के शरीर की ऊर्जा तुम्हारे शरीर में प्रवेश करने लगती है । यह ऊर्जा हाथ की दस अंगुली और पांव के दस अंगुलियों से निकलती है । इसलिए जब हम अपने शिष्यों को आशीर्वाद देते हैं, तब अपना हाथ उसके सिर पर रखते हैं । जिससे गुरु के शरीर की ऊर्जा शिष्य के माथे में प्रवेश कर जाए । ठीक इसी प्रकार जब तुम गुरु के चरण छूते हो तो पाँव के माध्यम से ऊर्जा शिष्य के शरीर में प्रवेश करने लगती है और चमत्कार हो जाता है । तुमने कहा है-

चरन कमल रज कहुँ सबु कहई ।
मानुष करनि मूरि कछु अहई ॥

तुम कहते हो कि मेरे चरण में कोई जड़ी (मूरि) लगी है, जिससे पत्थर भी मनुष्य बन जाता है । लेकिन पांव में कोई जड़ी नहीं है । मेरे शरीर में उतनी शक्ति है कि जो अहल्या अपने पति के शाप के कारण पत्थर के समान शिथिल हो गई थी, उसकी ऊर्जा निष्क्रिय हो गई थी और मेरे स्पर्श करते ही उसके शरीर की निष्क्रिय ऊर्जा पुनः जीवन्त हो गई, वह प्राणवान हो गई । इसका एक ही कारण है कि मेरे शरीर में जो शक्ति है वह जीवन्त है, क्रियात्मक है, इसलिए वह तुम्हें चमत्कार की तरह दिखती है ।

केवट! जो सठ होते हैं, उनके शरीर में भी संतों की संगति के लाभ से चामत्कारिक परिवर्तन हो जाता है । क्योंकि संतों की ऊर्जा का प्रवाह बड़े वेग से होने लगता है । जैसे संत अथवा गुरु परमात्मा से अपार शक्ति प्राप्त करता रहता

है और वह अपने शिष्यों को आशीर्वाद देता रहता है । यह घटनाक्रम चलता रहता है । इसलिए केवट हमारे संतों का मानना है कि चरणस्पर्श कर हम गुरुजनों की ऊर्जा को अपने शरीर में धारण करने लगते हैं । प्रणाम करने से गुरुजन को कोई लाभ नहीं होता, लेकिन शिष्यों को चामत्कारिक लाभ होने लगता है –

दोहा-

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती ।
सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती ॥

गुरु के चरण स्पर्श मात्र से ही शिष्य के हृदय में दिव्य प्रकाश भर जाता है । क्योंकि शिष्य तो अज्ञानी है और गुरु ज्ञान का सागर है ।

श्रीराम की बात सुनकर केवट ने कहा- **हे प्रभु! आप तो परमात्मा हैं, फिर आप एक सामान्य मनुष्य की तरह वल्कल वस्त्र धारण कर एक संन्यासी के समान क्यों भटक रहे हैं? आपके साथ सीता माता और भाई लक्ष्मण भी कष्ट सह रहे हैं । आखिर परमात्मा को क्यों इतना कष्ट सहना पड़ रहा है? जब परमात्मा होकर आप दुःख उठा रहे हैं तो फिर मैं कैसे सुखी हो सकता हूँ?** केवट की बात सुनकर श्रीराम ने कहा- केवट! जो तुम देख रहे हो, वैसा कुछ नहीं है । मैंने वल्कल वस्त्र धारण किया है । संन्यासी बनकर घूम रहा हूँ, लेकिन यह तो मेरे बाहर का स्वरूप है । अभी दो दिन पहले मैं राजकुमार था, राजकीय वस्त्रों में घूमा करता था । आज वल्कल वस्त्र में हूँ । कल फिर राजकीय वस्त्र में रहूँगा । यह तो मेरे बाहर का स्वरूप है और बाहर कुछ भी स्थायी नहीं है । अभी मैं वस्त्र बदल लूं, मैं दूसरा आदमी बन जाऊँगा । इसलिए वस्त्र और बाहर का आवरण किसी व्यक्ति की पहचान नहीं हो सकती । किसी भिखारी को राजकुमार का वस्त्र पहना दो और राजकुमार को भिखारी का वस्त्र पहना दो, इसे क्या अन्तर पड़ता है? तुम्हारे अन्दर जो गुण है

वही तुम्हारा व्यक्तित्व है । तुमने कहा है कि मैं दुःख सह रहा हूँ, दरअसल शरीर को दुःख होता है । आत्मा को नहीं होता । मनुष्य, व्रत, त्योहार और उपवास करता है, तो शरीर को भूख लगती है, लेकिन इस व्रत से आत्मा को तृप्ति होती है । तुम्हें लगता है कि मुझे दुःख हो रहा है, लेकिन मेरा उद्देश्य इस मातृभूमि को शत्रुओं से मुक्त करना है और संतों-देवताओं को सुख देना है । मै तो इसलिए प्रसन्न हूँ कि इतना पवित्र काम करने जा रहा हूँ । साधारण मनुष्य की तरह राजा बनना भोग-विलास करना मेरे जीवन का उद्देश्य नहीं है । विलासी लोगों की कभी कोई पहचान नहीं होती । जो संघर्ष करते हैं, अपना और समाज का कल्याण करते हैं, वैसे ही लोग इतिहास पुरुष बनते हैं । तुम्हे मोह के कारण मेरा राजकुमार रूप अच्छा लगता है । लेकिन इस वन प्रदेश और सम्पूर्ण आर्यावर्त को मेरे इस वल्कल स्वरूप वाले राम की आवश्यकता है । क्योंकि इसी स्वरूप से मैं मातृभूमि का उद्धार कर सकूंगा । इसलिए केवट! हम सभी लोग नियति के हाथों के खिलौने हैं । प्रत्येक व्यक्ति का कर्म नियति द्वारा निर्धारित है । नियति का अर्थ है अस्तित्व, यह सर्वोपरि है । यह मूल प्रकृति है, यहीं से जीवों के कर्मों का निर्धारण होता है । उसमें कभी परिवर्तन नहीं होता । जो होना है वही होता है । आने वाले कल में कई लोग माता कैकेयी को दोषी ठहराएंगे कि उनके कारण मेरा वनवास हुआ । लेकिन इसमें माता कैकेयी का कोई हाथ नहीं है । वे तो निमित्त मात्र हैं । उनसे ऐसा करवाया गया । क्योंकि कोई तो ऐसा चाहिए था जो मुझे वन भेजता । अगर मैं वन न जाऊँ तो इतना बड़ा कार्य कैसे पूरा होगा? यह तो पूर्व निर्धारित था । महर्षि वशिष्ठ, और यहाँ तक कि मेरे पिताजी को भी यह सब पता था । माता कैकेयी तो एक माध्यम बनीं और केवट! जो कुछ भी हो रहा है कुछ भी नया नहीं हो रहा है । यह तो पूरी घटना कब की घट चुकी है। हम तो नाटक के पात्र की तरह आज अभिनय कर रहे हैं । इस घटना में मैं भी कहीं नहीं हूँ । यह सब मुझसे करवाया जा रहा

है । तुम अपने कर्म का फल भोग रहे हो मैं अपने कर्म का फल भोग रहा हूँ । मैं भी नियति के अधीन हूँ । मुझे भी नियति के इशारे पर चलना पड़ रहा है । क्योंकि मैं भी परमात्मा का अंश ही हूँ । अन्तर यही है कि तुम मोह बन्धन में पड़े हो और मैं सब कुछ जानते-मुस्कुराते हुए अभिनय कर रहा हूँ । इसलिए मेरे इस स्वरूप पर दु:खी होने की आवश्यकता नहीं है ।

श्रीराम की बात सुनकर केवट ने प्रश्न किया- **हे प्रभु! जीव अपने कर्मों का फल कब तक पाता है?** श्रीराम ने मुस्कुराते हुए कहा- केवट! कर्मफल सूक्ष्म शरीर में एकत्र होता रहता है । जब पिछले जन्मों का पापकर्म इस जन्म के पुण्य कर्म से कट जाते हैं तो मनुष्य मुक्त हो जाता है । कई लोग अनेक जन्मों तक कर्मफल भोगते रहते हैं और जब सारे पाप कर्म नष्ट हो जाते हैं तो मनुष्य के मोह का अन्त हो जाता है । उसी को मोक्ष कहते हैं । यह सुनकर केवट ने कहा कि- **हे राम! जीव जब परमात्मा का अंश है, तो वह पाप कर्म क्यों करता है?** यह सुनकर श्रीराम ने कहा-जीव ज्योंही परमात्मा से अलग होता है, उसी क्षण वह माया के अधीन हो जाता है । और माया के अधीन होते ही वह नीति-अनीति का विचार छोड़ देता है । वह अहंकारी बन जाता है और अहंकार के कारण वह ऐसा अन्याय, अत्याचार, दुराचार करने लगता है कि उस पर पाप का आवरण चढ़ जाता है । क्योंकि पाप का जन्म अहंकार से होता है, इसलिए शास्त्रों में कहा गया है कि भक्ति करना चाहते हो तो अहंकार को त्यागो, सरल और विनीत बन जाओ । कहते हैं- **संत हृदय नवनीत समाना ।** जो भक्त होते हैं उसे ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार नहीं होता । इसलिए वह पाप नहीं करता । पाप तो मन का मैल है । मन को गंदा करोगे तो पाप करने का मन होगा। इसलिए मन को पवित्र रखो और समदृष्टि बनाओ । यही मान लो कि संसार में जो कुछ भी दृश्य-अदृश्य है, वह सब परमात्मा का ही है । यहाँ तुम्हारा कुछ नहीं है । तुम्हें दु:ख मिलता हो, सुख मिलता हो, सबको हंसते हुए स्वीकार

करो । क्योंकि तुम्हारे चाहने से न दु:ख जाने वाला है न सुख आने वाला है । तुम्हारा सुख और दु:ख दोनों कर्मफल पर आधारित है । इसलिए तुम्हारे चाहने से कुछ नहीं होने वाला है । बस प्रकृति के साथ रम जाओ । हवा की तरह एक तान, एक लय हो जाओ । तभी तुम्हारे जीवन में सुख आएगा । प्रकृति का प्रतिरोध करोगे, तो तुम स्वयं टूट जाओगे । प्रकृति की सहायता करोगे तो सुखी बन जाओगे । यही जीवन का सत्य है । श्रीराम की बात सुनकर केवट ने फिर प्रश्न पूछा कि- हे प्रभु! मैंने सुना है कि पूर्व जन्म में मैं महर्षि वशिष्ठ के कुल में जन्मा था । आपके नाम का महत्त्व नहीं समझने के कारण मैंने अहंकारवश उसका दुरुपयोग कर दिया था । जिसके लिए मैं श्रापवश केवट कुल में उत्पन्न हुआ । आज मैं एक निर्धन मजदूर हूँ । आखिर इतनी बड़ी सजा मुझे क्यों मिल रही है? प्रश्न सुनकर श्रीराम ने कहा-केवट! तुम शरीर के आधार पर सुख-दु:ख का निर्णय कर रहे हो, मैं तो महाराज दशरथ का पुत्र हूँ, फिर खुले पाँव इस निर्धन अवस्था में जंगलों में कैसे भटक रहा हूँ? तुम पहले मेरी पीड़ा का अन्दाज लगाओ, मेरी सीता मखमल पर चलती थी, दीवार पर बन्दर, भालू के चित्र देखकर डर जाती थी । बचपन से उसे पता भी नहीं था कि इतने कंटकाकीर्ण मार्ग भी होते होंगे, फिर भी इतना भीषण संकट हम सह रहे हैं । तुम कहोगे मैं पीड़ा से कराह रहा हूँ, लेकिन मेरी यह पीड़ा शरीर की पीड़ा है । इससे मेरे अन्दर जो दिव्यआत्मा है, उसका कोई सम्बन्ध नहीं । शरीर की पीड़ा से आत्मा दु:खी नहीं होती ।

एक दूसरी महत्त्वपूर्ण बात है कि तुम दु:ख और सुख को धन से जोड़ते हो । तुम सोचते होगे जो धनी हैं वे सुखी हैं और जो गरीब हैं वे दु:खी हैं । केवट, ऐसी बात नहीं है । शरीर की पीड़ा अलग बात है । दु:ख अथवा सुख शरीर के अन्दर की बात है । तुमने देखा होगा कि कई राजा-महाराजा, महासम्राट् होकर दिन रात किसी मानसिक पीड़ा में कराहते रहते हैं । इस तरह

दु:ख भी दो प्रकार के होते हैं । एक बाहर का दु:ख, जिसे तुम दु:ख मान रहे हो । एक भीतर का दु:ख जिसे धनी लोग मानते हैं । अन्तर यह है कि तुम धन के लिए दु:खी हो और वे लोग धनी होकर भी दु:खी हैं । सुख और दु:ख का सम्बन्ध धन से नहीं होता । कई बार गरीब भी सुखी होते हैं और अनेक बार धनी भी दु:खी होते हैं । इसका अर्थ है कि धन न किसी को दु:खी बना सकता है न सुखी बना सकता है।

केवट तुमने कहा है कि किस अपराध के कारण तुम्हें निर्धन होना पड़ा । तुम धनी नहीं हो, इसलिए अपने को निर्धन मान रहे हो । निर्धन का अर्थ है नि: + धन = निर्धन । अर्थात् बिना धन का । यह मनुष्य बिना धन का है । वह निर्धन हो सकता है, लेकिन दु:खी होना आवश्यक नहीं है । दु:खी तो तुम स्वयं बन गए हो । तुमने मान लिया है कि बिना धन के हम दु:खी हैं । लेकिन दु:ख का धन से कोई सम्बन्ध नहीं है । आज भी जंगलों में ऐसे परिवार रह रहे हैं जिनके पास कोई धन नहीं है । जंगल से फल-फूल तोड़कर जीवन काटते हैं । फिर भी वे तुम्हारे जैसे दु:खी नहीं है । वे हंसते हैं, मुस्कुराते हैं, क्योंकि उन लोगों ने मान लिया है कि सुखी होने के लिए धन आवश्यक नहीं है । समाज में जो धनी हैं, वे इन गरीब लोगों से अधिक दु:खी नहीं है । तुमने जंगल में लाखों संतों को देखा होगा, जिनके पास एक लंगोटी भर है फिर भी वे मस्त हैं और गीत गाते हैं, आनन्द मनाते हैं । दूसरी ओर जो धनी हैं वे किसी न किसी अभाव में दिन-रात आंसू बहाते रहते हैं । इसलिए दु:ख और सुख मानने की बात है ।

केवट सच पूछो तो कोई भी मनुष्य सम्राट् पैदा नहीं होता वह सम्राट् बन जाता है । यहाँ भी उसका कर्म साथ देता है । राजा के घर में पैदा हुआ व्यक्ति भी सन्यासी होकर जंगलों में निर्धन सा जीवन व्यतीत करता है और गरीब घर में पैदा होकर भी कोई व्यक्ति कर्म से धनपति बन जाता है ।

करम प्रधान बिस्व करि राखा, जो जस करइ तो तस फलु चाखा ।

इसलिए जीवन में कर्म प्रधान होता है । भाग्य तभी तक सहयोग करता है जब वह कर्म करता है । कोई भी व्यक्ति समाज में श्रेष्ठ तभी होता है, जब वह अच्छा कार्य करता है । तुम अगर निर्धन परिवार में पैदा हुए हो, तो इसका अर्थ यह नहीं कि तुम्हारी आत्मा निर्धन है । धन से आत्मा के सुख और परमानन्द को मत जोड़ो । धन में तो चंचलता है । यह अपना घर बदलता रहता है जो भी व्यक्ति कर्म करता है उसके पास धन टिकता है । जो लोग केवल भाग्य भरोसे बैठे रहते हैं, उनके पास नहीं टिकता ।

कहते हैं माता लक्ष्मी कर्मवीर के पास ही रहती हैं । कायर, भाग्य भरोसे बैठने वाले कभी धनवान नहीं होते । अब तुम्हें तय करना है कि तुम्हें कौन सा धन चाहिए? बाहर की धन संपत्ति या आत्मा का सुख? इतना निश्चित जान लो कि संसार तुम्हें कभी सुख नहीं देगा । संसार में सुख होता ही नहीं है । सुख तो संसार के बाहर है । संसार का जितना संग्रह करोगे, उतना दु:ख बढ़ेगा । दु:ख संग्रह में है, त्याग में नहीं । इसलिए उपनिषदों में कहा गया है कि संसार में रहो, लेकिन संसार में डूबो मत । संसार में तैरना सीखो ।

"नर भव तरहिं उपाय न दूजा ।"

इस संसार में तैरना सीखो, जितना डूबोगे, उतना दु:ख बढ़ेगा । जैसे तुम्हारे परिवार में जितने भी सदस्य हैं, वे सभी अपने-अपने कर्म भाग्य लेकर पैदा हुए हैं । तुम चाहकर भी उनके भाग्य में परिवर्तन नहीं कर सकते । फिर भी अगर तुम अपना सारा परिश्रम लागाकर उसमें परिवर्तन लाना चाहोगे और जब तुम परिवर्तन नहीं ला सकोगे तो तुम्हें बहुत दु:ख होगा । जो तुम चाहते हो, अगर वैसा नहीं होता है तो तुम दु:खी हो जाते हो । यही तो दु:ख का कारण है । कहते हैं-

काहु न कोऊँ सुख दुख कर ताता ।
निज कृत करम भोग सब त्राता ॥

तुम्हें दु:ख इसलिए होता है कि तुम्हारे मन में अहंकार बैठा है । तुम चाहते हो कि संसार तुम्हारे अनुसार चले । जो कि संभव नहीं है । तुम्हारे अनुसार कुछ भी चलने वाला नहीं है । सब कुछ अपने अनुसार चलता है । तुम्हारे चाहने पर सूर्य नहीं चलता, हवा नहीं बहती, वर्षा नहीं होती । तुम्हारे चाहने पर कुछ नहीं होता और जब तुम्हारे मन के अनुसार तुम्हारा पुत्र, तुम्हारी पत्नी या अन्य लोग नहीं चलते तो तुम्हें दु:ख होता है । तुम्हारे अहंकार को चोट लगती है । तुम्हारा अहंकार जब घायल होता है तो तुम आक्रोश में आ जाते हो और आक्रोश में आते ही उल्टा-सीधा काम करने लगते हो । क्योंकि तुम सब कुछ अपने अनुसार चलाना चाहते हो । सच पूछो तो दु:ख का कारण तुम्हारे अहंकार का घायल होना ही है । कोई भी व्यक्ति जब तुम्हारी बात नहीं मानता, तब तुम्हें दु:ख होता है ।

श्रीराम ने केवट को समझाते हुए कहा-"केवट! तुमने पशुओं को लड़ते हुए देखा होगा । उनका क्या विवाद होता है? वे सिर्फ इसलिए लड़ रहे होते हैं कि पहला पशु दूसरे पशु की बात नहीं मानता । ठीक उसी प्रकार दो मनुष्य भी सिर्फ इसलिए लड़ पड़ते हैं कि एक ने दूसरे की बात नहीं मानी । प्रत्येक व्यक्ति अपने अहंकार में जी रहा है और अहंकारी व्यक्ति हमेशा दु:खी रहता है ।"

श्रीराम की बात सुनकर केवट ने फिर से पूछा- **हे प्रभु! आप तो परमात्मा हैं, आप तो अहंकारी नहीं हैं, फिर भी आप दु:ख क्यों सह रहे हैं ?**

यह सुनकर श्रीराम ने कहा- केवट! जिसे तुम दु:ख कह रहे हो वह दु:ख नहीं है । दु:ख तो संताप देता है । यह सही है कि मैं कंटकाकीर्ण मार्ग पर भटक रहा हूँ । लेकिन मेरा भटकाव उद्देश्यपूर्ण है । मैं अकारण नहीं भटक रहा हूँ । मैंने इस भारत भूमि से दुष्टों के संहार का व्रत लिया है । **"निशिचर हीन करो मही ।"** मुझे इस संसार से दुष्टों का नाश करना है । क्योंकि ये दुष्ट हमारी

मातृभूमि को हमसे छीनना चाहते हैं । तुमने देखा होगा कि लंकापति रावण ने पूरे देश में अपनी सैनिक छावनी बना रखी है । उसने यहाँ के छोटे-छोटे राजाओं को अपने वश में कर लिया है । महाप्रतापी बालि से उसने संधि कर ली है । पूरे आर्यावर्त में उसने अपना पाँव फैला लिया है । केवल महाराज दशरथ के भय से अभी तक अयोध्या नहीं पहुँचा है । लेकिन अयोध्या के चारों ओर उसने युद्ध शिविर लगा रखा है । अगर आर्यावर्त के वासियों को जगाया नहीं गया, उन्हें एकत्र नहीं किया गया, उनमें एकता नहीं पैदा की गई, तो रावण चुन-चुनकर एक-एक राजा को अपने अधीन कर लेगा और पूरे आर्यावर्त पर उसका आधिपत्य हो जाएगा । केवट हम सबों को मिलकर आज अपनी मातृभूमि की रक्षा करनी है । मुझे इसी कार्य के लिए अवतार लेना पड़ा है । क्योंकि बड़ी तेजी से आर्यावर्त में रक्ष-संस्कृति फैल रही है । कहीं ऐसा न हो कि पूरे देश में राक्षसों की रक्षसंस्कृति फैल जाए और हमारा आर्यावर्त लंका का एक उपनिवेश बनकर रह जाए ।

केवट मुझे तो देवताओं के कार्य को पूरा करना है । मैंने देवताओं को वचन दिया है कि-

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा ।
तुम्हहि लागि धरिहउँ नर बेसा ॥

मैंने देवताओं को भयमुक्त करने और सम्पूर्ण आर्यावर्त से राक्षसों का नाश करने का व्रत लिया है । ताकि हमारी मातृभूमि सुरक्षित रह सके । इसके लिए मुझे हजार कष्ट सहने पड़ेंगे । कष्ट तो प्रत्येक नेतृत्व करने वाले को सहना ही पड़ता है । जिस प्रकार घर का मुखिया स्वयं कष्ट सहकर परिवार के अन्य सदस्यों को सुखी रखता है । उसी प्रकार मुझे भी कष्ट सहकर इस देश को सुखी रखना है ।

मुखिया मुखु सो चाहिए खान-पान अरु एक ।
पालई पोषई सकल अंग तुलसी सहित विवेक ॥

जिस प्रकार मनुष्य मुंह से भोजन करता है और भोजन के रस से सारे शरीर का पोषण करता है । उसी प्रकार मैंने जिस काम का संकल्प लिया है, उस काम को मुझे पूरा करना है । मैं जानता हूँ कि राष्ट्र की रक्षा करना बड़ा कठिन कार्य है । लेकिन आज हमारे देश में लोग अनेक टुकड़ों में बंटे हुए हैं । जिसका फायदा उठाकर राक्षस धीरे-धीरे हमारे देश में अपना पाँव फैला रहे हैं । केवट, किसी देश की रक्षा वहाँ की सेना के द्वारा नहीं होती है । उसके लिए सम्पूर्ण देश को एकजुट खड़ा होकर मुकाबला करना पड़ता है । मैं यहाँ के सभी बिखरे हुए लोगों को, अलग-अलग खेमें में बंटे राजाओं को एक सूत्र में बांधकर एक मंच पर लाना चाहता हूँ । यहाँ मनुष्य, वानर जाति के लोग, रीछ, वन में रहने वाले विभिन्न जातियों के कबीलों सभी के सभी बहादुर, विद्वान और कुशल योद्धा हैं। लेकिन वे भी अलग-अलग खेमें में बंटे हुए हैं, आज अगर वे एक साथ खड़े हो जाएं तो हमारे देश से शत्रु भाग खड़े होंगे । मैंने इसीलिए वनवास स्वीकार किया है कि इन वनवासियों को जगाकर इन्हें एक सूत्र में बांधना है । तभी वे अपने देश की रक्षा कर सकेंगे । हमारा दक्षिण का प्रान्त, उत्तर के प्रान्त से अलग हो रहा है । हमें अखण्ड आर्यावर्त बनाना है । इसके लिए अगर आवश्यकता पड़ी तो युद्ध के लिए मैं यहाँ के स्थानीय लोगों को तैयार करूंगा । ताकि वे लंका में जाकर शत्रुओं का संहार कर सकें । बुद्धिमानी इसी में है कि शत्रु के घर में जाकर उसे ध्वस्त कर दिया जाए ताकि भविष्य में हमारे देश पर उसकी कुदृष्टि ही न पड़े । केवट! जो राष्ट्र का नेतृत्व करते हैं, वे अपने सुख-दु:ख का ख्याल नहीं करते । तभी वे राष्ट्र पुरुष बनते हैं । तुम मुझे परमात्मा मानते हो, यह तुम्हारा अपना भाव है । लेकिन मैं अपनी मातृभूमि अर्थात् इस आर्यावर्त को मुक्त कराने आया हूँ । ताकि देश में हमारी वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार हो । इसलिए मुझे इस बात की चिन्ता नहीं है कि मुझे कितना दु:ख सहना पड़ रहा है । चिन्ता इस बात की है कि कैसे रावण के चंगुल से इस देश को बचाया जाए। सच पूछो तो मैं तो राष्ट्र धर्म का निर्वाह करने आया हूँ ।

केवट ने पूछा-**हे प्रभु! आपने जीवन, जगत् और मोक्ष की बात तो बताई, लेकिन एक संदेह बना रह गया कि क्या एक जन्म और दूसरे जन्म के बीच कोई अन्तर रहता है? अगर अन्तर है तो मृत्यु के बाद और दूसरे जन्म के पहले जीव कहाँ रहता है?** श्रीराम ने मुस्कुराते हुए कहा- यह सृष्टि चक्र अनादिकाल से चल रहा है । जो भी जीव जन्म लेता है उसे एक दिन मरना पड़ता है । यह जन्म-मरण का चक्र तब तक चलता है, जबतक जीव मोक्ष नहीं प्राप्त कर लेता । मोक्ष प्राप्त किए हुए जीव को दोबारा जन्म नहीं लेना पड़ता । लेकिन उसके पहले स्वर्ग और नर्क या विभिन्न लोकों में वह अवश्य भ्रमण करता है, लेकिन जन्म और मृत्यु से मुक्त नहीं होता । जिस भी योनि में जीव जन्म लेता है, उसमें उसे कर्म करना पड़ता है । जिसे क्रियमाण कर्म कहते हैं । वर्तमान में जो कुछ भी तुम कर रहे हो वह क्रियमाण कर्म है । इसी कर्म का अंश संचित और प्रारब्ध में जमा रहता है । संचित, प्रारब्ध और क्रियमाण कर्म का यह संग्रह केन्द्र है । वर्तमान में जो भी जीव कर्म करता है उसके अच्छे बुरे का हिसाब इसी में जमा होता है और जब यह जीवन समाप्त होता है तो अगले जीवन में भी संचित में एकत्र कर्मफल अपना प्रभाव छोड़ता है । पूर्व जन्म में किए गए कार्यों का प्रभाव हर अगले जन्म में भोगना पड़ता है ।

(**विशेष टिप्पणी**- संचित और प्रारब्ध कर्म को अगर आज के परिवेश में समझा जाए तो जिस प्रकार कम्प्यूटर में हार्ड-डिस्क होता है और उसी में सारा डाटा एकत्र रहता है । उसी प्रकार संचित और प्रारब्ध में भी कम्प्यूटर की तरह डाटा एकत्र रहता है ।)

अब तुम्हारा प्रश्न है कि जन्म और मृत्यु के बीच में जीव कहाँ रहता है? दरअसल बह्म की समस्त सृष्टि को ब्रह्माण्ड कहते हैं । इस ब्रह्माण्ड में ब्रह्म शक्ति अपने दिव्य आभा के साथ आच्छादित है । सबसे ऊपर आकाश गंगायें हैं, जिसमें अनन्त दिव्य प्रकाश भरा है । इसी प्रकाश से जीव उत्पन्न होता है ।

ब्रह्मा से ब्रह्माण्ड बना, जिसे आकाशगंगा भी कहते हैं । उसी आकाश गंगा में प्रकाश से जीव उत्पन्न होता है ।

(विशेष- आजकल भी प्रयोगशाला में विशेष परिस्थिति पैदा कर जीव उत्पन्न किया जाता है । इसलिए आकाश गंगा में जहाँ केवल हाइड्रोजन गैस भरा है, उसी से जीव पैदा होता है ।)

इस बात का भी प्रमाण मिलता है कि सूर्य मंडल में जो हाइड्रोजन गैस है, वहीं से प्रोटॉन के परमाणु भी पैदा होते हैं, जो बाद में हिलियम गैस बनकर सूर्य में ताप पैदा करते हैं । इससे स्पष्ट है कि आकाशगंगा में जीव पैदा होता है । इन अनन्त निहारिकाओं में से किसी एक निहारिका में सैंकड़ों सूर्य मंडल पैदा होते हैं । वर्तमान सूर्यमंडल के तरह अंतरिक्ष में अनन्त सूर्यमण्डल भी हैं ।

अब हम एक सूर्यमण्डल की बात करते हैं । एक सूर्यमण्डल में नौ ग्रह और अनेक उपग्रह होते हैं । अभी हम पृथ्वी ग्रह पर खड़े हैं । इस तरह के और भी आठ ग्रह हैं जो निरंतर सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं । हम अभी पृथ्वी लोक पर जन्म लेकर आए हैं । मनुष्य इस पृथ्वी पर भी 84 लाख योनियों में जन्म लेता है, मरता है फिर जन्म लेता है । एक ग्रह पर संभव है लाखों वर्ष जीव को रहना पड़े । अगर पृथ्वी पर जन्म हुआ तो कई जन्मों तक पृथ्वी पर ही विभिन्न रूपों में जन्म लेना और मरना पड़ता है । लेकिन कभी-कभी जीव को दूसरे ग्रहों पर भी जन्म लेना पड़ता है । एक ग्रह से दूसरे ग्रह की इतनी अधिक दूरी है कि एक ग्रह से दूसरे गह तक जाना असंभव लगता है । लेकिन जीव का स्थूल शरीर जब नष्ट हो जाता है तो वह अपने सूक्ष्म शरीर से कहीं भी आ जा सकता है । जिस प्रकार हमारा पृथ्वी लोक है, उसी प्रकार आठ ग्रह और भी हैं । इसके अतिरिक्त शिव लोक, सूर्य लोक, विष्णु लोक, ब्रह्म लोक आदि और भी कई लोक हैं जो उन्नत लोक माने जाते हैं । ये लोक पृथ्वी से बाहर अंतरिक्ष में हैं, जहाँ जीव का कर्म फल यदि अच्छा है तो मृत्यु के बाद इन लोकों में स्थान

मिलता है और उसका कर्म और अच्छा हुआ तो स्वर्ग लोक प्राप्त होता है । लेकिन स्वर्ग लोक स्थायी नहीं है । जब जीव का शुभ कर्मफल नष्ट हो जाता है तो उसे पुनः पृथ्वी पर आना पड़ता है । लेकिन जीव जब मोक्ष प्राप्त कर लेता है तो वह जन्म और मरण के बंधनों से मुक्त हो जाता है ।

श्रीराम ने कहा- केवट तुम्हारा प्रश्न है कि मत्यु और जन्म के बीच जीव कहाँ रहता है, तो स्पष्ट है कि अगर इस जन्म में जीव अगर पुण्य का काम करता है तो उसे उन्नत लोक प्राप्त होता है, यथा शिवलोक, ब्रह्मलोक आदि में स्थान मिलता है । अगर जीव नीच कर्म करता है तो पृथ्वी के नीचे जो सात लोक हैं- धरातल, अतल, सुतल, वितल, तलातल, नागलोक, गंधर्वलोक, पिशाचलोक आदि उसमें स्थान मिलता है । लेकिन मध्यम कर्म करने वाले को इसी पृथ्वी पर विभिन्न जीवों के रूप में जन्म लेना पड़ता है । संभव है मनुष्य मरने के बाद फिर मनुष्य बन जाए और अगर मनुष्य योनि में वह घृणित कर्म करता है तो कीट-पतंग या कीड़े-मकोड़े आदि में जन्म लेता है । इस पृथ्वी पर भी पाँच प्रकार के जीव पैदा होते हैं । अंडज, पिंडज, जलज, स्वेदज और उद्‌भिज आदि । इन्हीं विभिन्न रूपों में जीवों को जीना और मरना पड़ता है ।

केवट, तुम ज्ञान पाना चाहते हो, इसलिए तुम्हें बताता हूँ कि कई बार जीव अंतरिक्ष में भटकता रहता है और गर्भ की खोज करता रहता है । उचित समय पर उचित गर्भ मिलने पर जीव उसमें प्रवेश करता है । कई बार तो जीव को लाखों वर्ष प्रतीक्षा भी करनी पड़ती है । तब दोबारा जन्म मिलता है । यह जन्म-मृत्यु का रहस्य बड़ा अद्‌भुत है । इसलिए इसकी विवेचना में मत पड़ना । तुम नैतिक कर्म करते हुए इस जीवन को जीने का प्रयास करो, भविष्य में तुम्हें कौन सा जन्म मिले, बहुत सोचने की आवश्यकता नहीं है । इसे प्रकृति पर छोड़ दो । तुम नैतिक कर्म करते रहो । इसका फल क्या होगा, इसकी चिन्ता मत करो। इसी में तुम्हारा कल्याण है ।

श्रीराम की बात सुनकर केवट ने विनयपूर्वक पूछा- **हे प्रभु! आपने तो मुझे अपने आशीर्वाद से धन्य-धन्य कर दिया । अब मेरे मन में एक ही प्रश्न बचा है कि मैं इस संसार में रहते हुए अपना नैतिक कर्म कैसे पूरा करूँ? आखिर नैतिक कर्म करने की कोई विधि तो होगी, जिन विधियों का पालन कर हम जीवन को नैतिक बना सकते हैं ।**

केवट की बात सुनकर श्रीराम ने कहा- केवट! यह भवसागर है । तुम जो भी कर्म करते हो, उस कर्म से तुम्हें मुक्ति तो नहीं मिलेगी, क्योंकि कर्म करते समय पाप और पुण्य होता रहेगा । लेकिन जब तुम अपने समस्त कर्मों को परमात्मा को समर्पित कर दोगे । समस्त कर्मों को परमात्मा का आशीर्वाद मानकर करोगे, परमात्मा को साक्षी मानकर करोगे तो उस कर्म का जो फल होगा, उसके लिए तुम जवाबदेह नहीं होगे । तुम्हारा कर्म अगर परमात्मा को समर्पित है तो उस कर्म के फल के लिए परमात्मा जवाबदेह हैं । इसलिए तुम कर्म अवश्य करो, लेकिन उसका परिणाम क्या होगा, उसकी चिन्ता मत करो । (जिस प्रकार परीक्षा देने वाला स्वयं परीक्षाफल का निर्णय नहीं करता, यह काम कोई परीक्षक करता है ।) कर्मफल किसी दूसरे के हाथ में है, तुम प्रत्येक कर्म को परमात्मा को साक्षी मानकर करो ।

एक और महत्त्वपूर्ण बात है कि प्रतिदिन एकान्त में बैठकर अपने इष्टदेव का ध्यान करो और उनसे सुख, समृद्धि और शान्ति मांगो । संभव हो तो भगवान सूर्य की आराधना करो । गायत्री मंत्र का ध्यान पूर्वक पाठ करने से अनन्त शक्ति प्राप्त होती है । प्रात:काल सूर्य की उपासना में गायत्री मंत्र का पाठ और सूर्यभेदन प्राणायाम से अमृतफल की प्राप्ति होती है। अपने ललाट पर सूर्य को धारण करने की कल्पना करो, वह प्रकाश आज्ञाचक्र होते हुए विभिन्न चक्रों को पार करेगा, फिर समस्त इंद्रियों एवं समस्त रोम कूपों में प्रकाश का भ्रमण कराओ । इससे तुम्हारे शरीर की दीप्ति बढ़ेगी । ओज, ऊर्जा, आयु की बढ़ोतरी होगी । ऐसा प्रयास प्रतिदिन करना चाहिए ।

दिव्यां देहि मे शक्तिं दिव्यां देहि शांतिं मे ।

दिव्यं देहि आयुष्यं यशो बुद्धिं समुज्ज्वलाम् ॥

इस तरह नियमित गायत्रीमंत्र का पाठ, महामृत्युंजय मंत्र का जाप करते रहने से जीवनी शक्ति बढ़ती है, मन शांत होता है और परमात्मा के प्रति मन में आसक्ति बढ़ती है । लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात है हम काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और ईर्ष्या, इन विकारों से बचें और हमेशा सुन्दर और सुखद विचार मन में पैदा करते रहें ।

एक महत्त्वपूर्ण बात और है केवट! कभी भी मन में संशय, भय और आक्रोश को मत आने देना । क्योंकि भय से मनुष्य की शक्ति क्षीण होती है । दूसरी ओर संदेह में जीने वाला व्यक्ति जीवन में कभी सफलता नहीं प्राप्त करता और आक्रोश में जीने वाला व्यक्ति अल्पायु हो जाता है । इसलिए केवट! तुम मेरे आशीर्वाद को धारण करो ।

❀ ❀ ❀

श्रीराम केवट का संवाद

श्रीराम केवट का यह संवाद बड़ा मोहक है । जो भी व्यक्ति इस संवाद को ध्यानपूर्वक जीवन में धारण करेगा उसे निश्चित सुख-शान्ति प्राप्त होगी । पूर्व पाठ में वर्णित गीत में श्रीराम ने विभिन्न प्रकार से केवट को समझाया कि तुम इस संसार में रहते हुए संसार में डूबो मत, संसार को तैरकर पार करो । संसार में लिप्त रहना अच्छी बात नहीं है, जिस प्रकार अगर मक्खी अलग से मधु खाती है तो उसे तृप्ति होती है, लेकिन अगर वह मधु में डूब जाती है तो उसी में सटकर मर भी जाती है । पुनः श्रीराम ने केवट को कहा कि इस संसार में लिप्त मत होना । क्योंकि यह संसार तुम्हारा नहीं है, तुम तो एक सराय में रहने आए हो और कुछ दिनों के बाद तुम्हें इस सराय छोड़कर जाना पड़ेगा, फिर सराय से मोह क्यों करते हो? मोह करोगे तो इस मोहबंधन में डूब जाओगे । संसार से भागना भी नहीं है, भागकर कहाँ जाओगे, अगर जंगल में जाओगे तो वहाँ भी तुम घर बसा लोगे । इसलिए भागना कोई उपाय नहीं है । संसार में रहते हुए त्याग भाव से इसे भोगो, क्योंकि त्याग में सुख है और संग्रह में दुःख है ।

श्रीराम ने कहा केवट! तुम अपने शरीर की ओर देखो, तुम्हारे शरीर में विकार भरा है, जब तुम उसका त्याग कर देते हो तो तुम हल्के हो जाते हो । जबतक संग्रह किए रहोगे तुम पीड़ा में छटपटाते रहोगे, इसलिए सभी विकारों को त्याग दो । श्रीराम ने कहा कि इसी शरीर से तुम मुक्त भी हो सकते हो और नीचे भी गिर सकते हो । अच्छा कर्म करोगे तो तुम्हें उच्च लोक की प्राप्ति होगी। बुरा कर्म करोगे तो कीट-पतंग और कीड़ा की योनि प्राप्त होगी । मैंने तुम्हें आज

दिव्य ज्ञान प्रदान किया है, तुम इस ज्ञान को अपने जीवन में उतार लो, क्योंकि जब तक ज्ञान जीवन में नहीं उतरता वह कोरा ज्ञान रहता है, इसलिए अपने कर्म के द्वारा ज्ञान को भीतर उतारो, जब ज्ञान भीतर चला जाएगा, तो तुम्हारा कर्म भी पवित्र हो जाएगा । केवट! अपने कर्म को तप से पवित्र करो, जब तुम अपने कर्मों को साधना और तपस्या से पवित्र कर लोगे तो तुम्हें दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से मुक्ति हो जाएगी । केवट ने फिर प्रश्न पूछा- **हे राम! हम सभी जानते हैं कि जीव नश्वर है, मनुष्य बहुत ही थोड़े दिनों के लिए पृथ्वी पर आता है, फिर कहीं विलीन हो जाता है । ऐसा विलीन होता है कि फिर कभी न वह दिखाई देता न फिर उसके बारे में कोई ज्ञान हो पाता है । जाने वाला जीव भी भूल जाता है कि पहले वह कहाँ था और जहाँ से वह जाता है, वहाँ के लोग भी कुछ नहीं जान पाते । फिर भी समाज में इतनी लड़ाइयाँ लड़ी जाती हैं । केवल धन वैभव प्राप्त करने के लिए मनुष्य क्यों इतनी हिंसा, इतना अत्याचार और पापाचार करता है?**

केवट की बात सुनकर श्रीराम ने कहा- प्रिय केवट! यह सब केवल माया के कारण होता है । जीव जिस क्षण ब्रह्म से विलग होकर इस संसार में आता है, उसी क्षण वह माया के वशीभूत हो जाता है । तुमने सुना होगा कि माया भगवान विष्णु को भी नहीं छोड़ती । महामाया विष्णु के साथ रहती है । इसलिए जीव पहले माया के अधीन आता है फिर वह अहंकारी बन जाता है । अहंकार के कारण वह नीति-अनीति भूल जाता है । केवल अहंकार के कारण ही मनुष्य इतना पापाचार अन्याय और हिंसा करता है । क्योंकि वह अपने अहंकार के सामने दूसरे को खड़ा नहीं देख सकता, वह सबको कुचल कर रख देना चाहता है । इसलिए देश में इतनी लड़ाइयाँ लड़ी जाती हैं । देवताओं और राक्षसों में केवल वर्चस्व की लड़ाई होती है । उनकी लड़ाई का कोई दूसरा कारण नहीं होता ।

प्रत्येक मनुष्य को सामान्य रूप से निर्वाह करने के लिए प्रकृति ने स्वयं सारी व्यवस्था कर दी है । लेकिन उसे संतोष नहीं होता । उसे और अर्जन, और संग्रह करना है । इसलिए, छीनने और झपटने की क्रिया करता है । वह चाहता है कि संसार का समस्त वैभव उसे प्राप्त हो जाए । लेकिन आज तक किसी भी व्यक्ति को धन से संतोष नहीं हुआ है । इसी कारण उसकी लिप्सा बढ़ती रहती है । जीवन भर हर मनुष्य और चाहिए और चाहिए की कामना करते हुए एक दिन स्वयं समाप्त हो जाता है और उसकी सारी अर्जित सम्पत्ति यहीं रह जाती है। प्रत्येक मनुष्य की यात्रा जन्म से शुरू होती है और मृत्यु तक चलती है । जन्म के समय प्रत्येक व्यक्ति नंगा जन्म लेता है और मृत्यु के बाद उसे एक कफन देकर विदा कर दिया जाता है । केवट इस कफन के लिए वह जीवन भर संघर्ष करता रहता है । मृत्यु के पहले जो कुछ भी वह अर्जन किया रहता है, वह सब यहीं छूट जाता है । केवल कफन ही उसके साथ जाता है और वह भी अग्निदान के समय तक । फिर वह नंगा हो जाता है, जन्म के समय नंगा आता है और मृत्यु के समय भी वह नंगा हो जाता है । इस तरह उसका जीवन जन्म से मृत्यु तक केवल कफन के लिए ही व्यस्त रहता है ।

केवट ने फिर एक प्रश्न पूछा– **हे प्रभु! शास्त्रों में परमात्मा को प्राप्त करने के अनेक उपाय बताए गए हैं । कोई ज्ञान से प्रभु को समझना चाहता है, कोई भक्ति से तो कोई साख्य भाव से, कोई प्रेम से, तो कई लोग दास्य भाव से प्रभु को पाना चाहते हैं । इनमें से कौन-सी विधि सर्वोत्तम है?** केवट के इस प्रश्न को सुनकर श्रीराम ने कहा– हे केवट! प्रभु को पाने के अनेक मार्ग हैं । जिस प्रकार तुम्हें किसी स्थान पर पहुँचना है तो वहाँ तुम कई रास्तों से जा सकते हो, कई माध्यमों से जा सकते हो । कोई गाड़ी पर चढ़कर जाता है, तो कोई पैदल ही वहाँ पहुँच जाता है । कोई इधर से तो कोई उधर से वहाँ तक पहुँचता है । लेकिन पहुँचते सभी हैं क्योंकि परमात्मा एक ही

होता है । दरअसल परमात्मा एक दिव्य आलोक है, परम शक्ति है । इसलिए वह हवा की तरह सर्वत्र व्याप्त है । जबतक परमात्मा अव्यक्त रहता है, तब तक उसकी व्यापकता सर्वत्र रहती है । लेकिन जब कभी किसी कारण से परमात्मा को स्वरूप ग्रहण करना पड़ता है तो वे भी काल और समय की सीमा में बंध जाते हैं । क्योंकि स्वरूप का अर्थ है स्थूल हो जाना । इसलिए परमात्मा के सम्बन्ध में कहा जाता है–

बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना ।
कर बिनु करम, करइ बिधि नाना ॥

परमात्मा अव्यक्त होता है । इसलिए तुम जहाँ उसका स्मरण करोगे वह प्रकट हो जाएगा । लेकिन जब वह किसी अवतार के रूप में प्रकट होता है, तब काल और समय में बंध जाता है । केवट तुम मुझे परमात्मा मानते हो, मैंने भी अवतार ग्रहण किया है, क्योंकि अव्यक्त रहकर राक्षसों का संहार संभव नहीं था । इसलिए मुझे भी शरीर धर्म का पालन करना पड़ रहा है । मुझे भी प्यास लगती है, पाँव में कष्ट होता है, शरीर में पीड़ा होती है । लेकिन सच मानो यह कष्ट मुझे नहीं होता, मेरे शरीर को होता है । मेरे शरीर ने जन्म लिया है, एक दिन यह नष्ट हो जाएगा । लेकिन मैं नष्ट नहीं होऊँगा । तुम्हारा भी शरीर कभी नष्ट होगा, लेकिन तुम्हारी जीवात्मा कभी नष्ट नहीं होगी । क्योंकि ईश्वर जब अमर है तो उसका अंश कैसे मर सकता है? जिस प्रकार ईश्वर का दिव्य स्वरूप अमर है, उसी प्रकार तुम्हारी आत्मा अमर है ।

केवट तुम्हारा प्रश्न है कि मैं किस विधि से परमात्मा की पूजा करूँ? दरअसल परमात्मा की प्राप्ति पूजा विधि से नहीं होती । विधि तो आडम्बर है, इसलिए परमात्मा को पाने के चार मार्ग मैं तुम्हें बताता हूँ । आस्था, विश्वास, समर्पण और विसर्जन । अब तुम इन चारों को सविस्तार समझो ।

आस्था– आस्था का मतलब है तुम्हें परमात्मा पर भरोसा होना चाहिए, जब तक परमात्मा पर अथवा उसकी मूर्ति पर तुम्हें आस्था नहीं होगी, तुम परमात्मा को अपने जीवन में धारण नहीं कर सकोगे । इसीलिए सबसे पहले परमात्मा की सृष्टि पर तुम्हें आस्था करनी होगी । आस्था भक्ति की पहली सीढ़ी है ।

विश्वास– विश्वास का अर्थ है जिस परमात्मा पर तुमने आस्था रखी है, उस पर तुम्हें पूरा विश्वास है । तुम अब पीछे हटने वाले नहीं हो । तुमने परमात्मा के अस्तित्व पर विश्वास कर लिया है । परमात्मा है, ऐसा तुमने मान लिया है । यह भक्ति की दूसरी सीढ़ी है । लेकिन इसमें एक भय रहता है कि हो सकता है तुम्हें परमात्मा से अथवा अपने गुरु से विश्वास हट जाए । विश्वास कई बार टूट भी जाता है ।

समर्पण– समर्पण भक्ति की तीसरी सीढ़ी है । तुमने अपने गुरु पर आस्था किया, फिर विश्वास किया, लेकिन विश्वास से पीछे लौट भी सकते हो । जब तुम्हें अपने गुरु पर विश्वास नहीं है तब तुम्हें पीछे भागने की पूरी स्वतंत्रता है । इसलिए समर्पण की आवश्यकता पड़ती है । समर्पण का अर्थ है तुमने प्रभु को अपना सब कुछ दे दिया । अब तुम्हारे पास अपना कुछ है ही नहीं । तुम पूरी तरह परमात्मा के बन गए हो । इसलिए उच्च कोटि के संत परमात्मा पर समर्पित होते हैं । यह बड़ी अद्‌भुत घटना है । क्योंकि भक्त के पास जो भी है वह सब कुछ प्रभु को देकर विनीत भाव से चरणों में पड़ गया है । लेकिन यहाँ भी एक कठिनाई है कि जो भी भक्त प्रभु को समर्पित होता है, तो दो का भाव बना रहता है । एक प्रभु और दूसरा भक्त, अलग-अलग खड़े होते हैं, जैसे तुम वहाँ खड़े हो और मैं यहाँ खड़ा हूँ । जबतक यह दूरी बनी रहेगी, तब तक भक्त न तो परमात्मा को प्राप्त कर सकता है और न परमात्मा में प्रवेश कर सकता है । एक तत्त्व, एक लय, एक आत्म होने की आवश्यकता होती है । तभी भक्ति फलित होती है ।

विसर्जन– केवट! विसर्जन अन्तिम अवस्था है, इसमें कुछ बचता नहीं, इसमें शेष कुछ नहीं बचता । भक्त पूरी तरह से परमात्मा में लय हो जाता है । इसी को पूर्ण भक्ति कहते हैं ।

श्रीराम की बात सुनकर केवट ने पूछा– **हे प्रभु! जब परमात्मा में लय होना ही भक्ति है तो हमारे संतों ने ज्ञान मार्ग, प्रेम मार्ग, साख्य, दास्य आदि भक्ति की चर्चा क्यों की?** प्रश्न सुनकर श्रीराम ने कहा– केवट मैंने तुम्हें बताया कि पेट भरने के लिए अपनी-अपनी रूचि के भोजन लोग करते हैं । लेकिन उद्देश्य एक ही है कि पेट भरा जाए । हमारे शास्त्रों में अनेक संतों ने अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार भक्ति के मार्ग बताये हैं । कुछ लोग ज्ञान मार्ग से परमात्मा को पाते हैं, कुछ लोग प्रेम मार्ग से परमात्मा को प्राप्त करते हैं । लेकिन अनेक लोग ऐसे भी हैं जिन्हें किसी भी शास्त्र अथवा मार्ग का ज्ञान नहीं है । फिर भी वे अपनी भक्ति से परमात्मा को प्राप्त कर लेते हैं । इसलिए ज्ञान, विज्ञान और प्रेम, ये तमाम विधियाँ हैं । लेकिन सबसे सरल तरीका है समर्पण और विसर्जन । संसार के कर्म करते हुए प्रति-क्षण परमात्मा को मन में धारण किए रहना ही सर्वश्रेष्ठ भक्ति है । शास्त्रों में तो यहाँ तक कहा गया है कि सत्ययुग में ज्ञान से परमात्मा को पाया जाता है । त्रेतायुग में यज्ञ से परमात्मा मिलता है, तो द्वापर में प्रभु की पूजा की जाती है और कलियुग में केवल नाम का संकीर्तन किया जाता है–

कलिजुग केवल हरि गुन गाहा ।
गावत नर पावहिं भव थाहा ॥

इसलिए हे केवट! तुम प्रभु का निरंतर ध्यान करो । ऐसा कोई भी कर्म मत करना जो पाप हो, जिससे किसी को कष्ट होता हो, हमेशा अपने कल्याण के साथ-साथ घर परिवार और समाज के कल्याण की कामना करते रहो । यही असली भक्ति है ।

श्रीराम की बात सुनकर केवट गद्‌गद् हो गया । केवट ने भाव-विभोर होकर प्रभु को धन्यवाद देने के लिए एक भक्तिपूर्ण गीत गाया-

कैसे अरदास करूँ प्रभु तेरा, इतना तुमने प्यार किया ।
किन शब्दों में करूँ वन्दगी, इतना जो उपकार किया ॥
इस तन मन में भरी जवानी, हर साँसों में प्यार दिया ।
हर धड़कन को दिल से जोड़ा, होठों पे मुस्कान दिया ॥
कैसे अरदास करूँ प्रभु तेरा ... .!
रस से भरी तन में तरूणाई, आँखों में उन्माद दिया ।
रोम-रोम उपकृत है मेरा, इतना तुमने प्यार किया ॥
कैसे अरदास करूँ प्रभु तेरा ... .!
काम, क्रोध, अभिमान में पड़कर, इस जीवन का नाश किया ।
तुमने तोड़ा राग अनुग्रह, सब पापों का नाश किया ॥
कैसे अरदास करूँ प्रभु तेरा ... .!
नहीं कोई मन में रही लालसा, हर ममता को त्याग दिया ।
अब कुछ चाह न रही दयानिधि, इस जीवन को धन्य किया ॥
कैसे अरदास करूँ प्रभु तेरा ... ख्र ..!

केवट ने भक्तिपूर्वक श्रीराम को बार-बार प्रणाम किया और अपनी कृतज्ञता प्रकट की । श्रीराम ने भाव-विह्वल होकर केवट को बार-बार गले लगाया और कहा- केवट! अब तुम मुझे विदा करो । यह सुन केवट विषाद से भर गया । जिस परमात्मा की प्रतीक्षा वह अनन्तकाल से कर रहा था, आज वही परमात्मा उसके समक्ष खड़े हैं और अब जाने के लिए तैयार हैं । किसी भक्त के लिए इसे बड़ा आघात और क्या हो सकता है कि उसका भगवान उसे छोड़कर

जाने के लिए तैयार है । केवट ने सोचा जब मुझे छोड़कर प्रभु चले जाएंगे तो फिर मेरे जीवन का अर्थ क्या रह जाएगा? यह सत्य है कि प्रभु ने मुझे दिव्य ज्ञान प्रदान कर दिया है । लेकिन हम तो मनुष्य हैं, हम कैसे अपने प्रभु को जाने के लिए कहें? केवट कहता है- **हे प्रभु! कम से कम मुझे दो-चार दिन और सेवा करने का मौका दें । कम से कम मैं आपको कुछ दूर तक राह दिखाऊँगा और इसी बहाने सेवा का फल भी प्राप्त करूँगा ।**

नाथ साथ रहि पंथु देखाई ।
करि दिन चारि चरन सेवकाई ॥

यहाँ भी केवट अपने प्रभु के साथ ही रहना चाहता है । केवट के चरित्र की यह उत्कृष्ट अभिलाषा है कि वह अपने प्रभु की सेवा में निरंतर रहना चाहता है । केवट कहता है- **हे प्रभु! जिस वन में आप जायेंगे, मैं वहाँ जाकर आपके लिए पर्णकुटी बनाऊँगा, आपके रहने की व्यवस्था करूँगा । क्योंकि इस काम में मैं निपुण हूँ ।** सचमुच केवट की भक्ति अद्‌भुत है जो परमात्मा संसार को भोजन, वस्त्र और निवास प्रदान करता है, आज उसी परमात्मा के लिए एक भक्त पर्णकुटी बनाना चाहता है । कुछ भी हो, केवट है तो मनुष्य ही, उसे प्रभु की विराटता का क्या पता? परमात्मा किसी एक स्थान पर कैसे निवास कर सकता है? लेकिन केवट की भक्ति ही ऐसी है कि श्रीराम बार-बार केवट को गले लगा रहे हैं, केवट के प्रेमपूर्ण अनुरोध को देखकर श्रीराम उसे रोक भी नहीं पा रहे हैं । अपने अनेक सहयोगी मित्रों के साथ श्रीराम के साथ-साथ केवट भी वन को प्रस्थान कर रहे हैं । केवट सचमुच बड़ा भाग्यशाली है कि उसे बार-बार श्रीराम के साथ रहने के कारण अनेक संतों के दर्शन हो पा रहे हैं । वन में जो दुर्लभ संत हैं, वे भी श्रीराम से मिलने आते हैं और केवट को भी उन संतों के दर्शन लाभ होता है ।

जापर कृपा राम की होई ।
तापर कृपा करे सब कोई ॥

दुर्लभ संतों का आशीर्वाद अनवरत केवट को मिलता जा रहा है। श्रीराम को भारद्वाज, कश्यप, सुतीक्ष्ण, अत्रि, अनुसूया आदि से मिलना है और आगे की योजना पर विचार करना है । इसलिए उन्होंने केवट को प्रेमपूर्वक लौट जाने को कहा । केवट बड़े ही दु:खी मन से प्रभु की आज्ञा लेकर लौटता है । गंगा तट पर आकर उसने अपने समस्त मित्रों को बुलाया और कहा- **हे मित्र! हमलोगों ने प्रभु श्रीराम के दर्शन किए, हमें पुण्य लाभ हुआ, लेकिन ऐसा न हो कि आज के बाद हम फिर अपने संसार में डूब जायें और प्रभु को विस्मृत कर दें । इसलिए अब हम प्रतिदिन प्रभु का भजन-कीर्तन करेंगे ।** केवट के लौटने के पश्चात् सुमंतजी बड़े दु:खी मन से अवध लौट आये ।

गीत॰

आओ सब मिलकर के गायें, सियाराम के नाम ।
सीता राम - राधे श्याम - सीता राम - ॥
जब से तेरा सहारा पाया, मन में तेरा रूप बसाया ।
जल गई ज्योति तब से मन में, अब कैसा विश्राम ॥
सीता राम - राधे श्याम - सीता राम -
क्षण-क्षण जीवन बीत रहा है, तन में रोग पनप रहा है ।
किसे सुनाऊँ लोरी अपनी, किस पर करूँ अभिमान ॥
सीता राम - राधे श्याम - सीता राम -
''सुदर्शन'' तेरे दर पे आया, काम वासना सभी भुलाया ।
तोड़ चुका हूँ सारा बन्धन, आया तेरे धाम ॥
सीता राम - राधो श्याम - सीता राम -

चुन-चुन दाना महल बनाया, छीन-झपटकर खूब कमाया ।
पाप काल बन जब सर आया, कठ न आवे राम ॥
सीता राम - राधे श्याम - सीता राम -
मूष विवर जमीं खोद बनावे, तक्षक घुसके राज्य चलावे ।
सखा कुटुम्ब नोच धन खाये, कोई न आवे काम ॥
सीता राम - राधे श्याम - सीता राम -

केवट अब प्रतिदिन प्रभु का स्मरण करने लगा और यह क्रम चलता रहा । इसी बीच एक दिन केवट ने देखा कि गंगा तट पर अयोध्या की चतुरंगिनी सेना आ रही है । (भरतजी अपने बड़े भइया श्रीराम को मनाने के लिए अयोध्या की पूरी सेना, सभी माताओं, गुरु वशिष्ठ के साथ श्रीराम के पास जा रहे हैं । यह देखकर केवट के मन में संदेह हुआ । केवट ने जब सेना को आते देखा तो उसे लगा कि हो सकता है भरत के मन में राजसिंहासन का लोभ हो गया हो और उसने सोचा होगा कि श्रीराम जंगल में अकेले होंगे, उन्हें मारकर हमेशा के लिए अयोध्या का राजा बन जाऊँ ।) यह संदेह मन में आते ही केवट ने अपने समाज के सभी लोगों को डुग्गी बजाकर अपने पास बुलाया और सावधान करते हुए कहा कि भाइयों! आज श्रीराम पर खतरा है । उनके ऊपर आक्रमण करने के लिए भरतजी आ रहे हैं । हमें उनको रोकना है । सब लोग तैयार हो जाओ । हमलोग जीते जी भरत को आगे नहीं जाने देंगे ।

केवट की भक्ति समर्पण की भक्ति है । श्रीराम के लिए वह मर-मिटना चाहता है । इसलिए वह अयोध्या की चतुरंगिनी सेना से मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाता है । वह जानता है कि अगर वह श्रीराम के किसी भी काम आ गया तो उसका जीवन सार्थक हो जाएगा । इसलिए वह मरने-मारने के लिए तैयार हो जाता है । जब उसने युद्ध की घोषणा की तो पूरे निषाद-समाज के लोग

अपने-अपने आयुध लेकर भरत से लड़ने के लिए खड़े हो गए । उसी समय एक बुजुर्ग ने शकुन किया तो उसने पाया कि युद्ध की कोई संभावना नहीं है । उस बुजुर्ग ने केवट को रोकते हुए कहा कि शीघ्रता में उतावला बनकर कोई भी काम नहीं करना चाहिए । पहले पता लगाओ कि भरत की नीयत क्या है? यह बात सबको अच्छी लगी । पहले तो केवट ने अपना दूत भेजा कि पता लगाओ कि भरत की नीयत क्या है? जब दूत ने लौटकर बताया कि भरत युद्ध के लिए उत्सुक नहीं दिख रहे हैं, बल्कि वे तो निरंतर श्रीराम-श्रीराम बोले जा रहे हैं और उनकी आखों से आँसुओं की धारा बह रही है । तब केवट को लगा कि जो व्यक्ति आंसू बहाते हुए श्रीराम को पुकार रहा है, वह उनसे युद्ध कैसे कर सकता है? तब केवट स्वयं दौड़कर जाता है और भरत से मिलता है । केवट तब अपने मित्रों को कहता है कि मैं जब तक भरत से मिलकर आता हूँ, तब तक तुमलोग पूरे घाट को घेरे रखो ।

गहहू घाट भट समिटि सब, लेऊँ मरम मिलि जाइ ॥

केवट गुरु वशिष्ठ से मिलता है और तब उसे पता चलता है कि भरत युद्ध के लिए नहीं, अपने भाई को मनाने जा रहे हैं । उधर जब भरत को पता चलता है कि इस केवट को श्रीराम ने बार-बार गले लगाया तो भरतजी भी केवट के गले लग गए । गोस्वामीजी कहते हैं कि जिस व्यक्ति को समाज में नीच समझा जाता है, वह व्यक्ति अगर राम का प्रिय बन जाता है तो अन्य लोग भी उसे आदर देने लगते हैं । केवट रामका प्रिय बन चुका है । वह अनेक वर्षों तक अपने पिता वशिष्ठ के श्राप से मुक्ति के लिए श्रीराम की प्रतीक्षा करता रहा। कहते हैं कि जिस व्यक्ति को श्रीराम का आशीर्वाद मिल गया, वह व्यक्ति धन्य हो गया ।

रामसखहि मिलि भरत सप्रेमा ।
पूँछी कुसल सुमंगल खेमा ॥

केवट कितना विनीत है कि वह भरतजी से कहता है-

चौ०

कपटी कायर कुमति कुजाती । लोक बेद बाहेर सब भाँती ॥
राम कीन्ह आपन जबही तें । भयऊँ भुवन भूषन तबही तें ॥

प्रभु का भक्त तो विनीत होता ही है । वह कहता है कि मैं तो कुबुद्धि और कुजाति का हूँ, लेकिन जबसे श्रीराम ने मुझे अपना बना लिया है, मैं विश्व का भूषण बन गया हूँ । राम के आशीर्वाद को प्राप्त करते ही मैं विश्व का सर्वोत्तम व्यक्ति बन गया हूँ । यह विनय भाव देखकर भरतजी ने उसे अपना छोटा भाई समझकर गले लगा लिया । उसके बाद भरतजी के साथ केवट गंगा के उस घाट पर गया, जहाँ से श्रीराम ने गंगा को पार किया था । भरतजी ने उस घाट को भी प्रणाम किया । आदर सहित केवट ने सबको गंगा पार कराया और कहा हे भरत भइया! मैं आपके साथ श्रीराम के पास तक चलूंगा, क्योंकि जब दो भक्त मिल जाते हैं तो स्नेह की वर्षा होने लगती है । कहते हैं- दो भाईयों में विरोध हो सकता है, दो जाति के लोगों में विरोध हो सकता है, दो पंथ के लोग लड़ सकते हैं । लेकिन जब दो राम भक्त मिल जाते हैं तो वहाँ प्रेम की गंगा बहने लगती है । लेकिन भरतजी बार-बार राम को याद करके रोने लगते हैं । तब निषादराज केवट भरत को बार-बार समझाते हैं । उसके बाद निषादराज केवट भरतजी को लेकर राम की ओर प्रस्थान कर जाते हैं-

कियउ निषादनाथु अगुआईं ।
मातु पालकीं सकल चलाईं ॥

आगे-आगे केवट और पीछे-पीछे भरतजी पूरी सेना और माताओं के साथ श्रीराम की ओर जा रहे हैं । कई दिनों की यात्रा के पश्चात् भरतजी प्रयाग पहुँचते हैं । केवट उन्हें बताते हैं कि श्रीराम ने कहाँ-कहाँ विश्राम किया था ।

इस तरह केवट ने भरतजी को चित्रकूट के निकट पहुँचाया । केवट ने एक पर्वत के शिखर पर चढ़कर देखा कि चित्रकूट के निकट प्रभु श्रीराम निवास कर रहे हैं। केवट ने भरतजी को समझाया कि अब चिन्ता न करें । हम शीघ्र ही श्रीराम के दर्शन करेंगे ।

भरत को सेना सहित आते देख कुछ स्थानीय लोगों ने श्रीराम को बताया कि भरतजी अयोध्या की चतुरंगिनी सेना लेकर इधर ही आ रहे हैं । यह सुनते ही लखनजी आक्रोश में खड़े हो गए । उन्हें लगा कि अकेला समझकर भरतजी युद्ध करने आ रहे हैं । लेकिन श्रीराम सोचने लगे कि भरतजी को सेना सहित आने की क्या आवश्यकता है? लेकिन फिर सोचने लगे कि भरत का स्वभाव तो एक सरल भक्त सा है और भक्त कभी इतना लोभ में नहीं पड़ सकता । क्योंकि-

भरतहि होइ न राजमदु, बिधि हरि हर पद पाइ ॥

अगर संसार का साम्राज्य भी मिल जाए तो भरत को अहंकार नहीं हो सकता । लेकिन लक्ष्मणजी उग्र स्वभाव के कारण भरत से युद्ध करने के लिए खड़े हो गए । श्रीराम ने समझाया कि असमय में क्रोध करना उचित नहीं है । उसी समय केवट ने भरतजी को बताया कि प्रभु श्रीराम की कुटिया सामने आ गई है । तब भरतजी वहीं से दण्डवत् करने लगे और दण्डवत् करते-करते श्रीराम के पास पहुँचे । भरतजी इतनी ग्लानि में थे कि श्रीराम से आँख मिलाने का साहस भी नहीं कर पा रहे थे । इसीलिए जमीन पर लेट कर चल रहे थे । उधर श्रीराम भरत को खोज रहे हैं कि भरत किधर है? वे दूर देख रहे थे, तब निषादराज और केवट ने कहा- प्रभु! भरतजी को आप उधर कहाँ देख रहे हैं, वे तो आपके चरणों में पड़े हैं । यह देखते ही श्रीराम ने भरत को गले लगा लिया । कहते हैं जिस पत्थर पर श्रीराम और भरत का मिलन हुआ, वह पत्थर भी पिघल गया । एक क्षण के लिए पूरा चित्रकूट प्रदेश स्तब्ध रह गया । पशु, पक्षी, वृक्ष,

लता सब राम-भरत के मिलन को देख भाव विभोर हो गए । क्योंकि यह भगवान् और भक्त के मिलन का समय था ।

अब अयोध्या के सभी लोग उस महाभागी केवट से मिलकर धन्य हो रहे हैं, क्योंकि श्रीराम ने केवट को गले लगाया था । परमात्मा जब भक्त को गले लगा लेता है तो भक्ति की परिणति मानी जाती है । भरत और श्रीराम का मिलन इसी भक्ति की परिणति का ही परिणाम है ।

केवट के संबंध में एक महत्त्वपूर्ण बात है कि केवट एक भक्त है । पहले वह उपेक्षित था, लेकिन जब से श्रीराम ने उसे गले लगाया, तब से वह दिव्य व्यक्तित्व से विभूषित हो गया है । इसलिए केवट एक ऐसा पात्र है जो सामन्तवाद और दलित वर्ग के बीच में खड़ा होकर दोनों को जोड़ता है । चक्रवर्ती सम्राट् महाराज दशरथ के पुत्र श्रीराम स्वयं केवट के पास जाकर उनकी सहायता मांगते हैं । इसका अर्थ है कि श्रीराम कहते हैं कि तम अपने पिता के श्राप से शापित हो, तुम्हें इससे मुक्ति के लिए प्रयास करना चाहिए । आजतक तुम पत्नी और बच्चे में लिपटे रहे, तुमने कोई भक्ति नहीं की । तुम केवल व्यापार करते रहे, घर-परिवार की चिन्ता में पड़े रहे । तुम्हारा यह दायित्व नहीं था । तुम्हें यदि शाप से मुक्ति चाहिए तो तुम्हें प्रयास करना होगा । तुम नाव में बैठे हो और मैं तुम्हें पुकार रहा हूँ, लेकिन तुम्हारा अहंकार तुम्हें मेरे पास आने से रोक रहा है । यही तुम्हारी भूल है । अब जब तुम मुझसे मिल चुके हो तो अब तुम शापित नहीं रहे । तुम पिता के श्राप से मुक्त हो चुके हो । अब तुम दिव्य बन चुके हो । अब मेरे लिए जैसे भरत और शत्रुघ्न है, वैसे ही तुम भी हो । क्योंकि तुम अब मुझसे मिल चुके हो । अब कोई विभेद नहीं रहा । सारे विभेद मिट चुके हैं ।

श्रीराम का यह चिन्तन निश्चय ही हमें बार-बार झकझोरता है कि हमें तमाम रूढ़ियों, अन्ध परम्पराओं, ऊँच-नीच और छोटे-बड़े के विभेद को नष्ट

कर एक ऐसे समतामूलक समाज की स्थापना करनी है, जिसमें सभी लोग सद्भाव और समानता के आधार पर रह सकें । रूढ़िग्रस्त अन्ध परम्पराओं के कारण हमारा समाज बुरी तरह टूट चुका है । यहाँ तक कि मातृभूमि आर्यावर्त भी छोटे-बड़े कबीलों में राजाओं, वानर-भालू, किन्नर, रीक्ष, राक्षस मानव अदि खोमों में बंटकर खंडित हो रहा है । अगर यह परम्परा और चली तो आर्यावर्त का समूल नाश हो जाएगा । हमारी मातृभूमि राक्षसों के अधीन हो जाएगी । हमारा अखण्ड आर्यावर्त खण्डित हो जाएगा । इसलिए श्रीराम ने सबसे पहले केवट को गले लगाकर मानवता का अधिकार दिया । जो उपेक्षित केवट स्वयं को कुजाति कहता है, श्रीराम ने उसी को सुजाति बना दिया । गले मिलने का तो अर्थ ही है कि हम दोनों बराबर हैं । कोई विभेद नहीं है । सचमुच श्रीराम का यह महाप्रयास समतामूलक समाज की स्थापना की प्रथम ईंट है । लगता है श्रीराम ने संसार को यहीं से संकेत दिया कि इस आर्यावर्त में कोई छोटा-बड़ा नहीं है । सम्पूर्ण देश एक है । इसकी अखण्डता के लिए हम सब एक जुट होकर इसकी रक्षा करने के लिए तैयार हैं ।

श्रीराम एक ऐतिहासिक राष्ट्रपुरुष हैं, इसलिए उन्होंने सबसे पहले केवट को गले लगाकर इस बिखरे हुए राष्ट्र को एक सूत्र में जोड़ने का उद्घोष किया । इसलिए केवट दो-धाराओं को जोड़ने में सूत्रधार है, नायक है, संयोजक है । इसलिए वह श्रेष्ठ है । क्योंकि यहीं सें श्रीराम का महाभियान शुरू होता है । आगे चलकर श्रीराम ने चित्रकूट में समस्त वनवासी लोगों को एकत्र कर संगठन बनाना शुरू किया था । चित्रकूट से लेकर पंचवटी नासिक तक में सम्पूर्ण क्षेत्र के लोगों को उन्होंने एक सूत्र में बांधा । राष्ट्र विरोधी शक्तियों का नाश किया और समस्त वनवासी जातियों को एकत्र कर अखण्ड आर्यावर्त की घोषणा की । इस घोषणा में केवट एक महानायक की भूमिका अदा करता है ।

❀❀❀

केवट का सामाजिक परिवेश

केवट एक बहुत ही सुलझा हुआ आदर्शवादी व्यक्ति है । वह भले ही नाव चलाने का कार्य करता हो, लेकिन उसके अन्तर्मन में आध्यात्मिक परिवेश है, जिस कारण वह **"सर्वे भवन्तु सुखिनः"** के भाव को लेकर जी रहा है । वह एक सामाजिक व्यक्ति है । आजकल प्रायः लोगों को जब कोई बड़ी उपलब्धि मिल जाती है, तो वह स्वार्थी बन जाता है । वह अपने परिवार और अपने समाज को भूल जाता है । ऐसा हम अपने समाज में प्रतिदिन देखते हैं कि जब कभी किसी को कोई बड़ी सफलता मिलती है तो वह चाहता है कि वह सफलता केवल उसके लिए हो । हम ऐसे अनेक लोगों को भी जानते हैं, जो समाज में अत्यंत निर्धन रहते हैं और अगर किसी कारण वे धनी बन जाते हैं तो वे शीघ्र ही अपने सखा-कुटुम्ब को भूल जाते हैं । कई सिद्ध संतों के बारे में कहा जाता है कि जब वे ज्ञान को उपलब्ध हो जाते हैं तो मौन हो जाते हैं । वे अपना ज्ञान किसी को बाँटना नहीं चाहते । लेकिन यहाँ केवट एक ऐसा व्यक्ति है जिसे परमात्मा स्वयं मिल जाता है । अब यहाँ उसकी सामाजिकता इतनी प्रबल है कि वह अपना तो कल्याण चाहता ही है, साथ ही दूसरे के कल्याण की बात भी करता है ।

पद पखारि जलु पान करि, आपु सहित परिवार ।
पितर पारू करि प्रभुहि पुनि, मुदित गयउ लेइ पार ॥

यहाँ श्रीराम ने जब कहा कि केवट! तुम पाँव पखार दो । तो इसका मतलब है श्रीराम ने केवट को अपना पद रज प्रदान किया । जब केवट ने स्वयं

चरणामृत पान किया, फिर अपनी पत्नी और बच्चों को अमृत पान कराया, तब यहाँ श्रीराम पूछते हैं कि- केवट! अब तो तुम्हारी जीत पूरी हो गयी । केवट ने कहा- **नहीं प्रभु! में तो आपके आशीर्वाद से धन्य हो गया । लेकिन संभव है कि मेरे पूर्वजों को भी मोक्ष नहीं मिला होगा । इसलिए मेरी प्रार्थना है कि आप हमारे पूर्वजों का भी उद्धार कर दें ।** श्रीराम ने उन्हें भी आशीर्वाद दिया । इससे पता चलता है कि केवट एक उदारचित्त मानव है और उसे अपने सामाजिक-पारिवारिक परिवेश का भी ज्ञान है । इसलिए वह अपने सखा-सम्बन्धियों को भी श्रीराम का दर्शन लाभ कराता है । इस दृष्टि से केवट एक बहुत ही लोकप्रिय नेतृत्व वाला नागरिक है ।

गंगा पार करने के बाद श्रीराम केवट को उतराई देना चाहते हैं । यहाँ केवट की विशिष्ट पहचान होती है । श्रीराम केवट को अपनी मुद्रिका देना चाहते हैं, केवट अगर स्वर्ण-लोभी होता, उसे धन की चिंता होती तो वह शीघ्र ही उस कीमती मुद्रिका को ले लेता, लेकिन केवट कहता है-

नाथ आजु मैं काह न पावा ।
मिटे दोष दुख दारिद दावा ॥

केवट कहता है- **हे प्रभु! आज तुमने मुझे क्या नहीं दिया? तुमने तो आज मेरे सम्पूर्ण दैहिक, दैविक और भौतिक दुःखों को नाश कर दिया । मेरे सारे पूर्व जन्म के दोष नष्ट हो गए, शारीरिक और मानसिक बुराई नष्ट हो गई, दरिद्रता की अग्नि जो जल रही थी, वह नष्ट हो गयी । अब तो सब कुछ नष्ट हो चुका है । मन में कोई आग्रह-अनुग्रह भी नहीं रहा । जब चाह नष्ट हो गई तो अब मुझे क्या चाहिए । जब चाह न रही तो अब कोई राह भी नहीं बची । पता नहीं कई जन्मों से मजदूरी कर रहा हूँ । कई जन्मों से तुम्हारी आराधना कर रहा हूँ । आज तुमने आकर मेरी सभी कामनाओं को नष्ट कर दिया । हे दीनदयाल! तुमने मेरे अनुग्रह को तोड़**

दिया । मतलब मन में जो चाह थी उसे नष्ट कर दिया । जब चाह ही नहीं रही तो किसी वस्तु की कामना कैसे करूँ? इसलिए केवट कहता है कि तुमने तो मुझे सम्पूर्ण रूप से भर दिया है ।

यहाँ सीताजी और लक्ष्मणजी दोनों बहुत आग्रह करते हैं, लेकिन केवट समझ जाता है कि श्रीराम तो संन्यासी बनकर घुम रहे हैं । इनके पास तो कोई वस्तु है नहीं । जो अद्‌भुत वस्तु इनके पास है वह है इनका आशीर्वाद । वह तो मुझे मिल चुका है । अब ये मुझे कोई वस्तु देना चाहते हैं और वस्तु तो दुःख का कारण है, क्या मैं इतना मूर्ख हूँ कि अमृत के सागर के किनारे बैठकर घोंघा-सीतुआ माँगूं । अमृत-फल छोड़कर धतूरा माँगूं । केवट एक विवेकशील प्राणी की तरह प्रभु के आग्रह को टाल देता है । क्योंकि वह जानता है कि श्रीराम मुझे मुद्रिका देना चाहते हैं और मुद्रिका तो सीता मैया का पवित्र शृंगार है और यह मुद्रिका कोई साधारण वस्तु नहीं है । यह तो मणि है और नाव की खेवाई इतना बहुमूल्य मणि नहीं हो सकती । दूसरी बात केवट यह भी सोचता है कि पहली बात तो श्रीराम वन जा रहे हैं । वे तापस वेश में जा रहे हैं, वे संकट में हैं । एक चक्रवर्ती सम्राट् का पुत्र आज गंगा किनारे दीन-हीन बनकर खड़ा है । उससे किसी लुटेरा अथवा दलाल की तरह मजदूरी वसुलना अनैतिक बात है । इस हालत में तो लोग एक-दूसरे की सहायता करते हैं । इस संकट के समय श्रीराम से कुछ भी लेना उचित नहीं है । यह अनैतिक कार्य होगा । विपत्ति में पड़े मानव से भाड़ा वसुलना घोर पाप है । इसलिए केवट सीधे इंकार कर देता है । लेकिन सीताजी और लक्ष्मणजी के कहने पर केवट कहता है-

फिरती बार मोहि जो देबा ।
सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा ॥

केवट की उदात्त सोच के कारण उसका विवेक श्रीराम से किसी भी प्रकार की मजदूरी लेने से रोकता है ।

दरअसल, केवट एक आध्यात्मिक व्यक्ति है । शुरू से ही जब वह श्रीराम से मिलता है, तभी पता चलता है कि भले ही वह व्यापार कर रहा है, लेकिन उसे श्रीराम का सिर्फ आशीर्वाद चाहिए । वह मजाक करता है कि **हे राम! सुना है कि आपके पाँव में कोई जड़ी है ।** केवट इतना मूर्ख नहीं है कि वह नहीं जानता कि पांव में जड़ी कैसे हो सकती है? लेकिन वह बहाना बनाकर श्रीराम के पैर धोना चाहता है । तभी वह कहता है जब पत्थर से नारी बन सकती है तो काठ के नाव से नारी क्यों नहीं बन सकती है? अगर मेरी यह नाव नारी बन गई तो हे राम! मैं तो एक गरीब नाविक हूँ । मेरे लिए दो पत्नियों का पालन कैसे संभव होगा । वह श्रीराम से मजाक भी करता है । संकेत यह भी है कि एक से अधिक पत्नी रखने के कारण महाराज दशरथ की कितनी दुर्दशा हुई । यह एक साथ केवट का मजाक है और एक सामाजिक शिक्षा भी है कि मनुष्य को एक पत्नीव्रत का पालन करना चाहिए ।

केवट ने श्रीराम को कहा- **"हे प्रभु! जब आपने मुझे अपना बना लिया तो फिर मेरा त्याग मत करिए । क्योंकि आपके त्यागने से मनुष्य के जीवन में अनर्थ हो जाता है ।"** श्रीराम केवट के आग्रह को मान लेते हैं । यहाँ केवट एक बार फिर एक महत्त्वपूर्ण संदेश देता है । वह एक सामाजिक व्यक्ति है, जब श्रीराम उसे साथ चलने की अनुमति दे देते हैं तो वह तुरंत अपने सहयोगी मित्रों को बुलाता है और पूरे घाट की जवाबदेही देता है–

पुनि गुहँ ग्याति बोली सब लीन्हे ।
करि परितोषु बिदा तब कीन्हें ॥

अपने सभी भाई-बन्धुओं को बुलाकर केवट समझाता है कि श्रीराम को यहाँ रोकना उचित नहीं है, आप लोग अपने घर लौट जाएं । इसका अर्थ है कि केवट वहाँ का नायक है, वह जानता है कि अपने सहयोगी मित्रों के साथ कैसे बराबरी का व्यवहार किया जाए ।

केवट एक विवेकशील प्राणी है, वह सामान्य नाविक बन कर विषादग्रस्त भरत को भी समझाता है, ज्ञान के क्षेत्र में भरत ओर केवट में बड़ा अन्तर है । लेकिन केवट कहता है-**"भैया भरत! श्रीराम आपके बहुत ही प्रिय हैं, आप भी श्रीराम को बहुत प्रेम करते हैं, इसमें संदेह न करें । लेकिन इसमें किसी का दोष नहीं है ।"**

राम तुम्हहि प्रिय तुम्ह प्रिय रामहि ।
यह निरजोष दोसु बिधि बामहि ॥

अर्थात् भैया भरत यह विधि का विधान है इस बात से स्पष्ट होता है कि केवट विधि के विधान को भी जानता है, क्योंकि वह ज्ञानी है । वह विधाता के विरोध में खड़ा होना नहीं चाहता है । वह जानता है कि जो कुछ भी होने वाला है, वह होकर रहेगा । बड़े-बड़े संत तो यह भी कहते हैं कि जो घटना होने वाली है वह तो कब की घट चुकी है । राम का वनगमन, सीता-हरण आदि की घटना महाराज दशरथ तो पहले ही जान चुके थे, केवट उसी की ओर संकेत कर रहा है कि कोई किसी को बेकार दोष दे रहा है । जो हो रहा है वह तो विधाता का विधान है । किसी घटना के लिए किसी व्यक्ति को दोषी बनाना उचित नहीं है ।

छंद-

बिधि बाम की करनी कठिन जेहिं मातु कीन्हीं बावरी ।
तेहि राति पुनि-पुनि करहिं प्रभु सादर सरहना रावरी ॥

केवट भरत को कहता है- **आप श्रीराम की भक्ति पर भरोसा रखें । सब कुछ मंगल होगा । श्रीराम अंतर्यामी हैं, उनकी भक्ति पर भरोसा रखें और शांत मन से प्रभु का स्मरण करते रहें ।**

केवट ने श्रीराम को मार्ग दिखाकर चित्रकूट पहुँचाया और अब भरतजी को चित्रकूट की ओर पहुँचाने चला है ।

कियउ निषादनाथु अगुआईं ।

मातु पालकीं सकल चलाईं ॥

सम्पूर्ण राम-केवट संवाद को समझने पर पता चलता है कि केवट एक सामाजिक और आध्यात्मिक व्यक्ति है । वह रामायण की कथा को आगे बढ़ाता है । यह केवट के चरित्र की विशिष्टता है ।

❀ ❀ ❀

केवट की पारिवारिक स्थिति

एक दिन केवट अपनी पत्नी के साथ गंगा तट पर बैठा था और श्रीराम का चिन्तन कर रहा था । श्रीराम के वहाँ से जाने के बाद केवट का पूरा परिवार आध्यात्मिक बन गया । दिन भर कार्य-व्यापार करना और सुबह-शाम सभी लोग बैठकर परमात्मा का गुणगान किया करते थे । क्योंकि श्रीराम ने जाते समय कहा था कि जिस परिवार में भजन-कीर्तन, पूजन-हवन और गायत्री का पाठ होता है, उस परिवार से रोग-शोक-कलह का नाश हो जाता है । आपस में प्रेम बढ़ जाता है । पाप नष्ट हो जाता है । क्योंकि नैतिक परिवार में कोई भी सदस्य अनैतिक काम करने से डरता है । इसलिए परिवार का आध्यात्मिक होना आवश्यक है । एक दिन केवट की पत्नी ने केवट से कहा- हे पतिदेव! आपने तो श्रीराम का सम्पूर्ण दर्शन कर लिया, आज आपको जो भक्ति मिली वैसी भक्ति किसी को नहीं मिली होगी । आपको अनायास ही सब कुछ प्राप्त हो गया । लेकिन मैं तो उस दृष्टि के अभाव में प्रभु के दिव्य ज्ञान से वंचित रह गई । क्योंकि मेरे ऊपर विकारों का इतना बड़ा बोझ चढ़ा है कि मैं प्रभु को न देख-समझ सकी । मेरा कल्याण कैसे होगा?

पत्नी की बात सुनकर केवट ने कहा- **"यह सत्य है कि मैंने प्रभु का दर्शन किया । आज मुझे पता चला कि जिस संसार में रहकर मैं भोग विलास में लिप्त रहकर अपने को आनंदित महसूस करता था, वह सब झूठा आनन्द था । जिस प्रकार कोई व्यक्ति यदि ओस चाटकर कहे कि मैं तृप्त हो गया हूँ । लेकिन जहाँ तक तुम्हारा प्रश्न है तुम मुझसे अलग नहीं हो । पति और पत्नी दोनों सामान्य रूप से पाप पुण्य के भागी होते हैं।**

जैसे सिक्के का दो पाट होता है । आज से हम दोनों सत्कर्म करें, नैतिक आचरण करें, इसी में हमारा कल्याण है ।" यह सुनकर केवट की पत्नी ने कहा- हे! पतिदेव! आधे से अधिक जीवन तो गुजर चुका है अब तो धीरे-धीरे शरीर थक भी रहा है । अब भक्ति कैसे होगी? इस अवसर पर केवट की पत्नी ने एक गीत गाया, जिसे गाने में केवट ने भी साथ दिया है । आइए, हम सब भी इसे गाएँ –

गीत

जीवन गुजर गया तो, तेरा नाम याद आया ।
सब छोड़कर चले तो, अपना ख्याल आया ॥
जब तक चली ये साँसें, बाँटा है मिलके सबने ।
अपने बने पराये, तब होश मन में आया ॥
सब छोड़कर चले .....
जबसे मिला ये जीवन, इसे भोग में गँवाया ।
यह फूल-सी जवानी, कीचड़ में फेंक आया ॥
सब छोड़कर चले .....
जो था कभी हमारा, अब बन गया पराया ।
कागज की नाव लेकर, भव पार कर न पाया ॥
सब छोड़कर चले .....
जो हाथ थे हमारे, वे रह गये किनारे ।
जीवन की शाम होते, नामोनिशां मिटाया ॥
सब छोड़कर चले .....
इन आँखों में थी मस्ती, हुश्ने शराब आया ।
पीने का वक्त आया, तब होश मैं गँवाया ॥
सब छोड़कर चले .....

इस गीत को समाप्त कर दोनों ने प्रभु को प्रणाम किया और अपने-अपने कार्य-व्यापार में लग गए । शाम के समय केवट की पत्नी ने एक बड़ा सुन्दर गीत गाया । जिसमें उसने यह भाव प्रकट किया कि जीवन भर तो हम भोग-विलास में लगे रहे, लेकिन प्रभु का गुणगान नहीं कर सके । पता नहीं कब यह सांस रूक जाए । आज तक कभी कथा-पुराण और संतों का प्रवचन नहीं सुना, इसी पीड़ा को वह इस भजन के माध्यम से प्रकट कर रही है –

भ०

जीवन का कौन ठिकाना, सजन रे राम भजो ।
काम क्रोध अभिमान में पड़ कर,
जीवन नरक बनाया, सजन रे राम भजो ।
जीवन का कौन ... ... !
विषय वासना काम न आवे, धन वैभव सब रोग बढ़ावे,
क्षण-क्षण उमर घटावे, सजन रे राम भजो ।
जीवन का कौन ... ... !
दस द्वारे का पिंजर काया, रूप जवानी में मन भरमाया,
मर्कट नाच नचाया, सजन रे राम भजो ।
जीवन का कौन ... ... !
प्रभु का द्वार दिखा नहीं मद में,
उसका नाम न कभी सुनाया, कथा पुराण से दूर भगाया,
कभी न शीश झुकाया, सजन रे राम भजो ।
जीवन का कौन ... ... !

इस तरह केवट का सम्पूर्ण परिवार भक्तिमय वातावरण में अपना जीवन व्यतीत करने लगा ।

❀❀❀

एक आदर्श आश्रम-व्यवस्था

परमपूज्य सुदर्शनजी महाराज द्वारा स्थापित यह भव्य आश्रम राजधानी दिल्ली से तकरीबन 30 कि॰मी॰ दूर बादशाहपुर, गुड़गाँव(हरियाणा) में प्रकृति के सघन छाँव तले अवस्थित है । गुड़गाँव-सोहना मेन रोड से जो भी यात्री गुजरता है, उसे प्रकृति के कण-कण में व्याप्त **'आत्म-कल्याण केन्द्र'** की अलौकिक सुन्दरता मन्त्रमुग्ध कर अपनी ओर अनायास ही खींचती है । आश्रम पर लहराती हुई धर्मध्वजा दूर से ही जीवन को गति और प्रेरणा देती है । सद्गुरु का हर प्यारा यहाँ उतरता ही है । यहाँ मुस्कराते हुए फूल अपनी मनमोहक सुगन्ध से सारे वातावरण को महका देते हैं, सूर्य की सोनाभि किरणें आश्रम को अलौकिक सौन्दर्य से झिलमिला देती हैं ।

पूज्य सुदर्शन जी महाराज का मानना है कि **"आत्म-कल्याण केन्द्र"** एक सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक और आत्मिक जागरण का केन्द्र है । इसका मुख्य उद्देश्य जन समूह को अज्ञान, अशिक्षा, नशा की बुरी आदतों से मुक्त कराकर प्रत्येक व्यक्ति को स्वस्थ एवं सुन्दर जीवन जीने की विधि से अवगत कराना है । विशेषकर नारी समाज को अंधविश्वासों एवं रूढ़ियों से मुक्त कराकर उन्हें नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा और प्रशिक्षण देना है । इससे भी महत्त्वपूर्ण जो भावना उनके अन्तर्मन में शुद्ध रूप से परिलक्षित होती है, वह यह कि यहाँ विद्यार्थियों एवं युवाओं की प्रतिभा निखारने के लिए समय-समय पर मनोवैज्ञानिक प्रयोग किए जाएं, ताकि नई पीढ़ी के बच्चों को शिक्षित कर उन्हें जीवन में नैतिक आचरण की प्रेरणा दी जा सके ।

'आत्म-कल्याण केन्द्र' एक आत्मिक जागरण का केन्द्र है । यह केन्द्र केवल गृहत्यागी साधु-महात्माओं का आन्दोलन नहीं है, अपितु यह पूरे गृहस्थ सन्तों का आन्दोलन है । आचार्य श्री **'स्वयं साक्षी'** एवं **'आत्मद्रष्टा'** बनने के पक्षधर हैं । आपका कहना है- **"आत्म कल्याण केन्द्र एक वैचारिक उद्बोधन है । यह आत्म कल्याण न तो कोई धार्मिक आन्दोलन है और न किसी धर्मसम्प्रदाय का प्रचारतंत्र है, बल्कि यह प्रत्येक व्यक्ति को जगाने का महाभियान है । आत्म-कल्याण की यात्रा अन्धकार से प्रकाश, असत्य से सत्य, मर्त्य से अमर्त्य, सूक्ष्म से विराटता, परिधि से केन्द्र की ओर है ।"**

परमपूज्य सुदर्शन जी महाराज उस अवस्था के सन्त हैं, जहाँ तप की भावनाएं एक सहज स्वभाव का रूप लेकर मानवीय सेवाओं के लिए प्रेरित करती हैं । **'आत्म कल्याण केन्द्र'** के द्वारा हालांकि कई सेवा प्रकल्प चलाए जा रहे हैं, किन्तु कुछ विशेष इस प्रकार हैं:

➥ **हमें भी पढ़ाओ** - **''नियतं कुरू कर्मत्वम्''** यह भगवत्वाक्य ही पूज्यश्री का जीवन दर्शन है । वे शिव संकल्पमय संत हैं । उनका हर कार्य अपने लिए नहीं, अपितु समाज, राष्ट्र और मानव धर्म के लिए होता है ।

'हमें भी पढ़ाओ' गरीब एवं उपेक्षित बच्चों की नि:शुल्क शिक्षा प्रसार योजना है । इसके अन्तर्गत गांवों, मलिन बस्तियों, झुग्गी-झोपड़ी एवं स्लम में रहने वाले बच्चों के लिए शिक्षा केन्द्र खोले जाते हैं । साथ ही उन्हें शिक्षा के साथ-साथ बुरी आदतों से बचने का मार्ग भी बताया जाता है । उन्हें नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा दी जाती है और छोटे-मोटे रोजगार प्रारम्भ करने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है ।

'हमें भी पढ़ाओ' कार्यक्रम की शुरूआत भले ही एक बस्ती से हुई थी, परन्तु आज बरसों बीत जाने के उपरान्त देश के विभिन्न भागों में फैलकर

यह ऐसे समुदाय के लिए जरूरत बन गया है, जो अभी भी समाज की मुख्य धारा से कटे हुए हैं । **'हमें भी पढ़ाओ'** कार्यक्रम की मिली सफलता के फलस्वरूप ही आज विभिन्न जगहों से इसके और अधिक केन्द्र खोलने के आग्रह आ रहे हैं । अपने सीमित संसाधनों की वजह से संस्था इसे प्रत्येक जगह पर खोलने में असमर्थ है, फिर भी देश में इसके कई केन्द्र स्थापित हो चुके हैं, जिनमें से कुछ मुख्य पटना, भागलपुर, सीवान, मोतीहारी, छपरा, समस्तीपुर, सीतामढ़ी, दरभंगा, मधुबनी, मुजफ्फरपुर(बिहार) झारखण्ड व नई दिल्ली में हैं।

पूज्य महाराजश्री का मानना है कि देश की आधी से अधिक जनता गाँवों में बसी है । अत: हमारा देश गाँवों में बसा है । ग्रामवासी शिक्षित और स्वस्थ होंगे, तो देश उन्नत होगा । पूज्यश्री जैसे महान तपस्वी ने अपने तपोमयी साधना एवं सतत् निष्ठा से विद्या मन्दिरों का किस प्रकार शुभारम्भ, संचालन, संवर्धन और अलंकरण किया है, उसे वे ही जान सकते हैं, जो उनके परिवेश में रह रहे हैं ।

➥ **नशा-विमुक्ति अभियान** - पूज्य महाराजश्री के पावन सान्निध्य में केन्द्र ने नशा विमुक्ति जन जागरण का अभियान चलाया है । हमें भी पढ़ाओ केन्द्र में जो बच्चे पढ़ते हैं, उनके माता-पिता के लिए यह अनिवार्य कर दिया गया है कि वे अपने बच्चों की खुशी के लिए किसी भी प्रकार के नशे का सेवन न करें । अगर बच्चों को नशा सेवन से बचाना है, तो माता-पिता को भी नशा करने से बचना होगा । इसलिए केन्द्र ने **'नशा विमुक्ति'** पर विशेष बल दिया है।

पूज्य महाराजश्री ने गहरे रूप में अनुभव किया है कि जो लोग नशा का सेवन करते हैं, वे स्वयं भी नहीं चाहते कि उनके बच्चे भी किसी प्रकार के नशे का सेवन करें । कारण साफ है कि कोई भी माता-पिता अपने फूल जैसे बच्चे

को बर्बाद होते हुए नहीं देख सकता । फिर भी समाज में इतनी बुराई है कि बच्चे इन बुराइयों का शिकार बड़ी आसानी से हो जाते हैं । अगर इन बच्चों को समय रहते नशे के चंगुल और अशिक्षा के विषदंत से नहीं बचाया गया, तो समाज की दशा बड़ी ही भयावह हो सकती है ।

हमारे देश की भित्ति आने वाले कल के बच्चों पर ही निर्भर है । अत: नई पीढ़ी का हर युवा नशा-विमुक्त हो, राष्ट्र के स्वाभिमान का प्रतीक बन सके, ऐसी पूज्य महाराजश्री की हार्दिक अभिलाषा है ।

➥ **ध्यान-योग क्रान्ति** - सद्गुरु की 'ध्यान योग कुटिया' आश्रम के प्रांगण में ही अवस्थित है । यहाँ निरन्तर नए-नए लोग ध्यान एवं योग की क्रियाओं को सीखने में जुटे हुए हैं । जीवन की दौड़-धूप से थके व्यक्ति जैसे ही यहाँ ध्यान में डूबते हैं, पूरे दिन का सफर कब और कैसे पूरा हो जाता है, पता भी नहीं चलता ।

पूज्य आचार्यश्री का मानना है कि परमात्मा से नाता जोड़ने और आत्म-रूपान्तरण की प्रक्रिया हेतु योग और ध्यान एक गहन प्रयोग का कार्य करते हैं । तप एवं सिद्धि की शीघ्र अनुभूति के लिए आश्रम से बढ़कर अन्य कोई उपयुक्त जगह हो ही नहीं सकती । हवा में झूमते पेड़-पौधे, गाती-चहकती चिड़ियों और सुहाने मौसम के बीच यहाँ हर साधक आश्रम में प्रवेश करते ही अपने अंतस से जुड़ जाता है ।

इसके अतिरिक्त **'आत्म-कल्याण केन्द्र'** विद्यालयों और गाँवों के चौपालों में समय-समय पर योग-शिविर लगाने का कार्य भी कर रहा है । योग एवं ध्यान की विभिन्न क्रियाओं को सीखकर आज हजारों बाल, वरिष्ठ एवं युवक अपने जीवन को आत्म-कल्याण केन्द्र के माध्यम से सफलीभूत कर रहे हैं ।

➥ **निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा शिविर** – पूज्य आचार्यश्री का जन-स्वास्थ्य पर विशेष जोर रहता है । आप यम-नियम के साथ-साथ लोगों के खान-पान की शुद्धता और शुद्ध पेयजल की व्यवस्था पर विशेष ध्यान देते हैं ।

'आत्म कल्याण केन्द्र' पूज्य महाराजश्री के कुशल दिशा-निर्देशन में समय-समय पर गाँवों में निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा शिविर का आयोजन करता है । गरीब-बेसहारा लोगों को किस प्रकार ज्यादा से ज्यादा मदद पहुँच सकती है, इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है । **'मुफ्त'** में ही मरीज हर परेशानी से मुक्त हो जाता है । चिकित्सा के ज्यादा से ज्यादा उपक्रम चलाए जा सकें, इस बात पर **'आत्म कल्याण केन्द्र'** कार्य करने में पूर्ण रूप से संलग्न है ।

➥ **वरिष्ठ नागरकि निवास योजना** – जीवन के अन्तिम पड़ाव पर जब वरिष्ठ नागरिकों की शारीरिक क्षमताएँ साथ नहीं दे पाती हैं, जिस परिवार को सींचा था अब तक, वही परिस्थितियाँ प्रतिकूल हो जाती हैं, जिसने सुरक्षा दी थी औरों को वह खुद असुरक्षित हो जाता है, अवलम्बन बना था जो अपनों का, भार वही खुद हो जाता है । ऐसे वरिष्ठ नागरिकों के गम को दूर करने व उनके सम्मान को कायम रखने के लिए पूज्य महाराजश्री ने आश्रम के प्रांगण में ही वरिष्ठ नागरिक निवास का निर्माण किया है । यहाँ के वरिष्ठ नागरिकों ने खुद काम किया, प्रेरक बने और अपनी हर परेशानी को झुठला दिया है । आज सद्गुरुदेव के वरदहस्त तले उन सबका जीवन पुष्पित और पल्लवित है, सब सुरक्षा के घेरे में अपने एकाकी जीवन की सांझ को बल प्रदान करने में जुटे हुए हैं ।

वरिष्ठ नागरिकों के निवास हेतु **'आत्म कल्याण केन्द्र'** देहरादून में भी इसी प्रकार की व्यवस्था नियोजित की गई है ।

➥ **महिला कल्याण योजना** – पूज्य आचार्यश्री का दृष्टिकोण व्यापक है । हर पल, लोकोपकार में बीतता है । **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः'** जहाँ नारियों का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं । इस बात की अवधारणा रखते हुए आचार्यश्री ने नारियों की खोई हुई अस्मिता उन्हें पुनः वापस दिलाने के लिए नारी-उत्थान अभियान चलाया है । आपने महिला एवं बाल-कल्याण को ध्यान में रखते हुए पाठशालाओं के अतिरिक्त बहुत से व्यावसायिक केन्द्र खुलवाए हैं, जिनका मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में नितान्त अभाव था ।

पूज्य आचार्यश्री का मानना है कि गाँवों में महिलाएं जितना पढ़-लिखकर आगे बढ़ेंगी, वे उतनी ही विदुषी बनेंगी । यदि घर में गृहिणी महिला शिक्षित हैं, तो सारा परिवार शिक्षित हो जाएगा । निराश्रित महिलाओं एवं उनके बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं देखभाल, **'आत्म-कल्याण केन्द्र'** के रचनात्मक गतिविधियों का प्रमुख अंग रहा है । पूज्य आचार्यश्री ने गाँवों में, विशेषकर जगह-जगह महिला मंडलों की स्थापना की है, ताकि वे घर-घर जाकर महिलाओं की समस्याओं को सुनें और उनकी परेशानियों का निराकरण करें ।

❀ ❀ ❀

आचार्य सुदर्शनजी द्वारा संचालित जनकल्याणकारी संस्थायें

संस्कारपूर्ण शिक्षा एवं समाज को समर्पित **आचार्यश्री सुदर्शनजी** एक ऐसे व्यक्तित्त्व हैं जिन्होंने जीवन भर समाज के कल्याण के लिए निरंतर कार्य किया है । इन्होंने हमेशा समाज से जो कुछ भी पाया, उससे कहीं अधिक समाज को दिया है । प्रारम्भ में सरकारी सेवा को त्याग कर इन्होंने बिरला जन-कल्याण ट्रस्ट की ओर से वनवासी क्षेत्रों में वर्षों काम किया । वहाँ से त्याग-पत्र देकर उन्होंने शिक्षा, अध्यात्म एवं जन-कल्याण का मार्ग चुना ।

इनके जीवन में कई उपलब्धियाँ है, इन्होंने कई बार विदेश यात्राएँ भी की हैं, लेकिन इनकी सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि दो विद्यालयों की सफल स्थापना मानी जाती है । पटना सेंट्रल स्कूल(बच्चों एवं बच्चियों के लिए) एवं कृष्णा निकेतन(सिर्फ बच्चियों के लिए) जो सी.बी.एस.ई. से +2 तक मान्यता प्राप्त है और जहाँ छात्र-छात्राओं के लिए आवासीय सुविधा भी उपलब्ध है । इन्होंने अब तक 40 से ऊपर विभिन्न राज्यों में शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की है । इनमें सबसे महत्वपूर्ण पटना सेंट्रल स्कूल और कृष्णा निकेतन है, जो ब्ठैम् से +2 तक मान्यता प्राप्त है और जहाँ छात्र-छात्राओं के लिए आवासीय सुविधा भी उपलब्ध है । इसके अतिरिक्त झारखण्ड एवं बिहार में और भी ब्ठैम् से मान्यता प्राप्त कई विद्यालय चल रहे हैं ।

यह भी विचार करने की बात है कि आचार्यश्री सुदर्शनजी महाराज ने जो 2 बड़े विद्यालय पटना सेंट्रल स्कूल और कृष्णा निकेतन मेन रोड पर स्थापित

किया है, उन विद्यालयों के लिए उन्होंने जमीन खरीदकर स्थायी रूप से समिति के नाम से रजिष्ट्री करा दी । वे इन विद्यालयों को यह जमीन 30 वर्षों हेतु लीज पर भी दे सकते थे, जिसकी कीमत आज करोड़ों में आंकी जा सकती है । लेकिन इन्होंने इन विद्यालयों को यह जमीन स्थायी रूप से दे दी । यह उनका एक महत्त्वपूर्ण त्याग है ।

आचार्यश्री सुदर्शनजी ने शिक्षा के क्षेत्र में एम.ए., पी-एच. डी. की ऊँची डिग्री लेकर भी नौकरी नहीं की । सरकारी नौकरी को त्यागा और जन-कल्याण को अपना मिशन बनाया । अभी तक इन्होंने कुल 90(नब्बे) पुस्तकों की रचना कर दी हैं । इन्होंने इस समाज को अपना जीवन अर्पित कर दिया है और जीवन भर आत्म-कल्याण और जन-कल्याण का प्रचार-प्रसार करने का संकल्प भी लिया है ।

इनकी सेवा भावना से प्रभावित होकर **"टाइम्स ऑफ इण्डिया ग्रुप"** ने उनके व्यक्तित्व व कृतित्व पर एक विशाल ग्रन्थ **'ए मैन विदाउट मिशन'** प्रकाशित किया एवं इसका विमोचन लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार के हाथों सम्पन्न हुआ ।

पटना सेंट्रल स्कूल और कृष्णा निकेतन की सफलता के बाद इन्होंने निर्णय लिया कि इन विद्यालयों की अधिक से अधिक शाखाएँ पूरे देश में खोली जाएं । इस योजना पर अभी कार्य चल भी रहा है । हाल ही में **आचार्य सुदर्शनजी** ने सीतामढ़ी में अपनी निज की 15 एकड़ जमीन में से 5-5 एकड़ इन्हीं दोनों विद्यालयों की शाखा खोलने हेतु दी है । इसके अतिरिक्त इन्होंने स्व-संसाधन से और भी कई जन-कल्याणकारी संस्थाएं स्थापित की हैं, जो आज अपने-अपने क्षेत्रों में सफलतापूर्वक चल रही हैं । ये संस्थाएं हैं- **हमें भी पढ़ाओ, डॉ॰ वाई॰ के॰ सुदर्शन कृष्णा सिंह एजुकेशनल फॉउण्डेशन**

ट्रस्ट, आचार्य सुदर्शन फाउण्डेशन, कृष्णा सुदर्शन वेलफेयर ट्रस्ट, आचार्य सुदर्शन आई हॉस्पीटल, सीतामढ़ी, माँ जगतारणी शक्तिपीठ; मुबारकपुर-मेजरगंज, गीतांजली, आचार्य सुदर्शन स्पोर्टस् एण्ड कल्चरल एसोशिएशन, नारी-जागरण एवं नशा विमुक्ति केन्द्र एवं आत्म-कल्याण केन्द्र आदि जन-कल्याणकारी संस्थाओं की स्थापना की, जो आज कई प्रान्तों में सफलतापूर्वक चल रही हैं । आइए, इन जनकल्याणकारी संस्थाओं को हम नजदीक से देखें-

1. **हमें भी पढ़ाओ:**

   'हमें भी पढ़ाओ' स्लम, झुग्गी-झोपड़ी एवं पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चे-बच्चियों के लिए नि:शुल्क शिक्षा प्रसार योजना है । इसमें बड़े-बड़े शहरों, महानगरों के बगल में बसे स्लम बस्ती, झुग्गी-झोपड़ी एवं प्लास्टिक की खोली में रहने वाले बच्चे जो सड़कों के किनारे, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन पर कागज के टुकड़े एवं पत्ते बटोरते रहते हैं, उन्हीं बच्चों को **'हमें भी पढ़ाओ'** के कर्मचारी अपने साथ ले कर आते हैं और उन्हें मनुष्य के समान जीने और पढ़ने का प्रशिक्षण देते हैं । यह क्रम अभी बिहार, झारखंड, हरियाणा, दिल्ली आदि क्षेत्रों में चल रहा है। इस योजना को पूरे देश में लागू करने का प्रयास किया जा रहा है । अब तक केवल बिहार, झारखंड में 100 से उपर **'हमें भी पढ़ाओ'** के केन्द्र चल रहे हैं, जिसका सम्पूर्ण खर्च आचार्य सुदर्शनजी स्वयं वहन कर रहे हैं । इस मद में अभी तक कहीं से कोई सहायता नहीं मिली है । दिल्ली के माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने परामर्श किया है कि दिल्ली में ऐसे बच्चों के लिए आवासीय हमें भी पढ़ाओ केन्द्र भी खोले जाएं ।

2. **डॉ० वाई० के० सुदर्शन कृष्णा सिंह एजुकेशनल फॉउण्डेशन ट्रस्ट:**

   इस संस्था का मूल उद्देश्य है सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में जिला के प्रमुख स्थानों पर सामान्य स्तर के परिवारों के बच्चों के लिए एवं गरीब तथा दलित वर्ग के बच्चों के लिए स्कूल चलाना ।

3. **आचार्य सुदर्शन फाउण्डेशन:**

   यह फाउण्डेशन एक रजिस्टर्ड संस्था है जो सुदूर देहाती क्षेत्रों में विद्यालय के साथ-साथ अधिक से अधिक **'हमें भी पढ़ाओ'** के नि:शुल्क केन्द्र भी चलाता है ।

4. **कृष्णा सुदर्शन वेलफेयर ट्रस्ट:**

   यह एक रजिस्टर्ड ट्रस्ट है जिसका कार्य क्षेत्र मूलत: वनवासी बहुल क्षेत्रों में निर्धारित किया गया है ताकि वन-प्रदेश में रहने वाले पिछड़े बच्चों के लिए नि:शुल्क **'हमें भी पढ़ाओ'** के केन्द्र खोले जाएं और उन्हें **'जीवन जीने की विधि'** एवं स्वास्थ्य सुरक्षा के प्रति जागरूक बनाया जाय । यह प्रयास निरंतर चल रहा है ।

5. **आचार्य सुदर्शन आई हॉस्पीटल, सीतामढ़ी:**

   'सीतामढ़ी' भारत-नेपाल सीमा पर अभी भी एक अविकसित क्षेत्र है । स्वास्थ्य एवं शिक्षा की दृष्टि से अभी भी यहाँ बहुत कुछ करने की आवश्यकता है । सीतामढ़ी में पहली बार आचार्य सुदर्शनजी ने मेन रोड पर अपनी बहुमूल्य जमीन इस आई हास्पीटल को दान स्वरूप दे दी है। यहाँ अस्पताल भवन बनकर तैयार हो गया है और विख्यात विशेषज्ञों द्वारा आधुनिक मशीनों के द्वारा आँखों का नि:शुन्ल्क ऑपरेशन किया जा रहा है । इस सम्पूर्ण व्यवस्था का पूर्ण दायित्त्व आचार्यश्री सुदर्शनजी के उपर है । अभी भी इस आई हॉस्पीटल का भवन विस्तार एवं निर्माण

कार्य चल रहा है । योजना है कि यह उत्तर बिहार का सबसे बड़ा हॉस्पीटल बने ।

6. माँ जगतारणी शक्तिपीठ, मुबारकपुर, मेजरगंज:

इस शक्तिपीठ की स्थापना नारी सशक्तिकरण के लिए की गई है । ग्रामीण क्षेत्रों में जो दलित और पिछड़े वर्गों की बच्चियाँ अपने भविष्य को खुले आकाश में ढूँढती रहती हैं, यह शक्तिपीठ उन बच्चियों के जीवन में प्रकाश भरने का काम करती है । इन पिछड़ी बच्चियों को चित्रकारी, मूर्त्तिकारी, खिलौना बनाना, डगरा एवं सूप बनाना, पेंटिग करना, नृत्य एवं संगीत का अभ्यास एवं ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित लोकगीत एवं लोक परंपरा के निर्वहण का प्रशिक्षण दिया जाता है, ताकि वे अपने पाँव पर खड़ी हो सकें ।

7. गीतांजली:

यह संस्था ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को नि:शुल्क नृत्य-संगीत और लोक-गीतों के गायन का प्रशिक्षण देती है । दलित वर्ग के दमित बाल कलाकारों को बटोरकर उन्हें लोक गीतों पर आधारित संगीत, नुक्कड़-नाटक, प्राचीन अलाह-रूदल, रानी सरंगा, शीत-वसंत, बिहुला, बारहमासा, होली, कजरी और झूमर जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचारित लोकगीतों का प्रशिक्षण दिया जाता है । आचार्य सुदर्शनजी द्वारा लगभग दो सौ संगीत लिखे गये हैं । उन्हें इन संगीतों का विधिवत् एवं सम्पूर्ण प्रशिक्षण नि:शुल्क दिया जाता है ।

8. आचार्य सुदर्शन स्पोर्टस् एण्ड कल्चरल एसोशिएशन:

ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित गुल्ली-डंडा, कबड्डी, खोखो, कुश्ती, भॉलीबॉल, फुटबॉल जैसे खेलों को स्थानीय बच्चों को इसका विधिवत्

प्रशिक्षण दिया जाता है, ताकि वे इन प्राचीन खेलों को राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाए रख सकें । पिछले तीन वर्षों से पटना में टेनी-काईट, टेनिस, थ्रो-बॉल की राष्ट्रीय प्रतियोगिता इस स्पोर्टस एसोशिएश न के द्वारा कराई जाती रही है ।

9. नारी-जागरण एवं नशा विमुक्ति केन्द्र:

नारी जागरण की आवश्यकता मूल रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में एवं दलित वर्ग की महिलाओं के लिए आवश्यक है । इस योजना के अंतर्गत हम प्रयास कर रहें हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में हमारी महिला कार्यकर्त्ता जाएं और उन्हें स्वास्थ्य एवं नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा दें । नारी परिवार की केन्द्र होती है, एक स्वस्थ्य और नैतिक नारी अपने बच्चों की देखभाल और पढ़ाई-लिखाई एवं नशा जैसी बुरी आदतों से बचा सकती है । नारी के जागरण मात्र से परिवार सुन्दर और स्वस्थ बन सकता है । अपने सीमित साधन से आचार्यश्री नारी सशक्तिकरण एवं बच्चों की नशा विमुक्ति का प्रयास कर रहे हैं ।

10. आत्म-कल्याण केन्द्र:

आत्म-कल्याण केन्द्र एक रजिस्टर्ड ट्रस्ट है । इसका मुख्य उद्देश्य युवक-युवतियों के बीच जागरूकता पैदा करना है, ताकि उनका जीवन नैतिक और आध्यात्मिक बन सके । योग, ध्यान, व्यायाम एवं प्राणायाम के द्वारा अपने शरीर और मन को कैसे स्वस्थ रखा जाए, यहाँ उन्हें इन विधियों का विधिवत् प्रशिक्षण दिया जाता है । आज समाज में तनाव, चिन्ता, कलह, आत्म-चिन्तन और आत्मपीड़न जैसी बीमारियों से लोग अशांत बने हुए हैं । यहाँ उन्हें उचित वातावरण में योग-क्रियाओं का प्रशिक्षण दिया जाता है, ताकि वे **"आत्मा रक्षितो धर्म:"** का पालन

कर सकें । एक स्वस्थ व्यक्ति ही स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकता है । आत्म-कल्याण का अर्थ ही है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने कल्याण के लिए सतत् प्रयास करता रहे ।

- आचार्य सुदर्शनजी ने एक और भी अतिमहत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक जनकल्याणकारी संकल्प लिया है । सीतामढ़ी जिला के मुबारकपुर ग्राम में आचार्यश्री ने अपने पाँच एकड़ के एक प्लॉट में से एक एकड़ जमीन **"आत्मकल्याण केन्द्र"** को विधिवत दान में दे दिया है । आत्मकल्याण केन्द्र द्वारा इस जमीन पर सामूहिक विवाह केन्द्र, पुस्तकालय एवं योग और ध्यान केन्द्र का निर्माण कार्य प्रारंभ किया जा चुका है ।

- शेष बचे चार एकड़ जमीन में गरीब, दलित एवं सामान्य स्तर के बच्चों के लिए आवासीय सुविधायुक्त विद्यालय और छात्रावास बनवाये जा रहे हैं । अब तक 40 कमरे बनकर पूरी तरह तैयार हो चुके हैं एवं आवासीय सुविधा से जुड़े अन्य आवश्यक साधनों को एकत्रित किया जा रहा है । प्रयास है कि यहाँ सामान्य स्तर व गरीब बच्चों को पूर्ण व्यवस्थायुक्त शिक्षा दी जाए और उनके रहने, खाने-पीने एवं अन्य सुविधाएं उन्हें उपलब्ध करायी जाए । भवन बनकर तैयार है और उसका उद्घाटन होना शेष है । यह पाँच एकड़ जमीन आचार्यश्री की निजी संपत्ति है, जिसे उन्होंने जनकल्याण के लिए समर्पित कर दिया है ।

- मुबारकपुर ग्राम के दूसरे भाग में आचार्यश्री एक अन्य पन्द्रह एकड़ के प्लॉट पर पटना सेंट्रल स्कूल और कृष्णा निकेतन आवासीय विद्यालय बनाना चाहते हैं । साथ ही उसी प्लॉट के शेष बचे 5

एकड़ जमीन में गरीब एवं उपेक्षित बच्चों के लिए **"हमें भी पढ़ाओ"** के केन्द्र भी खोलना चाहते हैं । योजना का स्वरूप तैयार हो गया है । योजना है कि तीनों विद्यालय के लिए पाँच-पाँच एकड़ जमीन दान स्वरूप दे दी जाए, जिसपर ऐसे विद्यालय का निर्माण हो, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों के, सामान्य स्तर के परिवारों के बच्चे बच्चियाँ पढ़ सकें । योजना के अनुसार उस प्लॉट में 10 एकड़ जमीन और खरीद कर दे दी जाए, ताकि छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग विद्यालय और छात्रावास बनाया जा सके । इस से संबंधित प्रारूप दो-तीन महीनों में पूरा कर लिया जाएगा, तदुपरान्त कार्यारम्भ की योजना है । यह आचार्यश्री का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण संकल्प है ।

- एक योजना यह भी है कि इस 15 एकड़ के प्लॉट पर बच्चे-बच्चियों एवं गरीब बच्चों के लिए विद्यालय एवं छात्रावास बने, इसके साथ ग्रामीण महिलाओं के लिए कुटीर उद्योग एवं ग्रामीण शिल्पकला का भी प्रशिक्षण दिया जाए । इस क्षेत्र में महिलाओं के द्वारा मधुबनी पेंटिंग के प्रशिक्षण की मांग बहुत बढ़ती जा रही है । इन तमाम योजनाओं पर विशेषज्ञों से गंभीरतापूर्वक विचार किया जा रहा है । यह सीतामढ़ी जैसे पिछड़े क्षेत्र के लिए एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाएगी ।

-शंभूनाथ पाण्डेय

शालीमार बाग, नई दिल्ली ।

ज्ञानमूर्ति ब्रह्माण्डविद् महामानव शिखरपुरुष सन्तशिरोमणि आचार्यश्री सुदर्शनजी महाराज

सृष्टि संरचना शिव-शक्ति से सप्राण बनकर संचरित होती रहती है । इस प्रक्रिया में सुन्दर-असुन्दर प्रकृति-पुष्प उपजते-खिलते-बिखरते रहते हैं। सदाशिव की सदय दृष्टि जब सृष्टि में होती है, तब सुग्राह्य सुमन का शुभागमन होता है और वह सुमन अपने सुकर्मों का विस्तार कर उच्चता व दिव्यता के शीर्ष पर पहुँचता है । इस कड़ी में माता सीता की प्राकट्य भूमि सीतामढ़ी बिहार ने समय की दीर्घ अवधि के बाद भगवान भोलेनाथ व भवानी की विशेष अनुकम्पा से **आचार्यश्री सुदर्शन** के रूप में एक ऐसी विभूति को प्रादुर्भूत किया जो असंदिग्ध रूप से अपनी आभा, महिमा, शक्ति और भक्ति से सकल संसार को आलोकित कर रहा है । यह महामानव सभी तुलना के परे है, क्योंकि यह समस्त साधारण मापदंडों और उपदेशों से ऊपर है । इस दिव्यपुष्प का मन प्रकाशमान है, जो समस्त ज्ञान के स्त्रोत के साथ अपना संयोग सथापित करने में समर्थ है ।

एम.ए., पी-एच.डी., विद्यावाचस्पति, साहित्यविशारद्, साहित्यरत्नरूपी शैक्षणिक उपाधियों से अलंकृत, कृषि संस्कृति से ऋषि संस्कृति की आध्यात्मिक यात्रा के पथिक **आचार्यश्री सुदर्शनजी महाराज** सकल ब्रह्मांड चिंतक के रूप में स्थापित शिखरपुरुष हैं, महामानव हैं और भारतीय संत सरणियों में शिरोमणि हैं । इनका अवतरण बिहार की पावन धरती पर उन कड़ियों में माना जाता है जिनमें बुद्ध, महावीर, चाणक्य, पाणिनि और राजेन्द्र

प्रसाद जैसी विभूतियों को याद किया जाता है । इन्होंने अपने जीवन में जो साधनाएँ की हैं, वे साधनाएँ ही तो इनके दिव्यस्वरूप को स्पष्ट करती हैं । एक-एक स्वरूप पर एक-एक ग्रंथ लिखा जा सकता है, एक-एक महाकाव्य लिखा जा सकता है । सत्य कथन है-

बन्द सुमन सा लाल होठों पर, मुसकान अभी भी बाकी है ।
फेंके हुए उपेक्षित पत्थर, उनमें फूल खिलाना बाकी है ॥

इसी भाव को अपने हृदय में स्थापित करके **आचार्यश्री सुदर्शन** सामाजिकों के हित में अधोलिखित संस्थानों की स्थापना व सफल संचालन करते हुए देश-दुनिया के विशिष्ट मंचों से नानाविध पुरस्कारों को पाते हुए, अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर विज्ञ-पुरुष के रूप में जनमानस की जिह्वा पर आसीन हैं ।

1. डॉ॰ वाई॰ के॰ सुदर्शन कृष्णा सिंह एजुकेशनल फाउण्डेशन ट्रस्ट(रजि॰)
2. कृष्णा सुदर्शन चैरिटेबल ट्रस्ट
3. आचार्य सुदर्शन फाउण्डेशन
4. हमें भी पढ़ाओ एजुकेशन फाउण्डेशन
5. आत्म-कल्याण केन्द्र, गुड़गाँव
6. पटना सेन्ट्रल स्कूल सोसाइटी
7. कृष्णा निकेतन गर्ल्स स्कूल सोसाइटी
8. माँ जगतारिणी शक्तिपीठ, सीतामढ़ी
9. आचार्य सुदर्शन लायन्स आई हॉस्पीटल, सीतामढ़ी ।
10. गीतांजलि (आचार्यश्री के भक्ति संगीतों पर आधारित)
11. आचार्य सुदर्शन स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल फाउण्डेशन ।

सम्प्रति, परमपिता परमेश्वर का दिव्य शक्तिपात जब इस महामानव पर हुआ तो ये एकांतवासी हो गये । धारणा, ध्यान और समाधि की सफल प्रक्रियाओं से गुजरकर इनका तन-मन दिव्यता के अलौकिक प्रकाश से आलोकित हुआ, जिसके परिणामस्वरूप बादशाहपुर गुड़गाँव में **आत्मकल्याण केन्द्र** रूपी कमल पुष्प का उदय हुआ ।

07 जुलाई 2006 की पावन बेला में भगवान सूर्य से अनंत रश्मियों को पाकर आचार्यश्री सुदर्शन बादशाहपुर, गुड़गाँव(हरियाणा) में सोहना रोड पर आत्मकल्याण केन्द्र की स्थापना करके देश-दुनिया के तमाम समुदायों का सर्वात्मकल्याण करने के लिए कृतसंकल्पित हुए । अपने पावन संकल्पों को सांसारिक रूप देने के क्रम में पूज्यश्री ने आत्मकल्याण केन्द्र के तहत हमें भी पढ़ाओ, नारी जागरण समिति, वरिष्ठ नागरिक आवास, नशा विमुक्ति अभियान आदि कई सेवा प्रकल्पों का सफल संचालन करके भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत में छोटे-छोटे गाँवों से लेकर महानगरों तक लघु/दीर्घ शाखाओं की स्थापना करके तमाम जनमानस के बीच ह्रासोन्मुखी सभ्यता को जीवन्त और उत्कर्षमयी बनाकर संत समाज के बीच शिरोमणि स्वरूप राजमुकुट धारण किया ।

आत्मकल्याण केन्द्र सुदर्शनधाम में ध्यानस्थ अवस्था में **आचार्यश्री** को प्रभु श्रीराम का आज्ञाबोध और परम आशीर्वाद प्राप्त हुआ । इसी मुद्रा में प्रभु की जीवनगाथा के अनेकानेक रहस्यमय तथ्यों का सुबोधाशीष पाकर **पूज्य महाराजश्री** ने संगीतमय श्रीराम कथा के अमृतमय प्रवचनों की ज्ञान गंगा में श्रद्धालु भक्तों को अवगाहन कराने का महासंकल्प लिया । कथाक्रम के माध्यम से इन्होंने भारत ही नहीं, विश्व के अन्य देशों के जनमानस में प्रभु श्रीराम की जीवनगाथा को संगीतमय रूप देकर प्रवचन की ऐसी पीयूषधारा बहायी कि देश-दुनिया के तमाम कथावाचकों, समाज सुधारकों एवं संतसमाज ने इनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की । इन्होंने दूरदर्शन के प्रतिष्ठित चैनलों, आस्था,

संस्कार, जी-जागरण, श्रद्धा, सौभाग्य आदि के माध्यम से विश्व के 138 देशों में संगीतमय श्रीरामकथा का संदेश देकर जन-जन के चरित्र में श्रीराम की आदर्शवादिता एवं शुचिता को धारण करने की विशेष शक्ति प्रदान की है । उपनिषद् के ऋषि के रूप में सृष्टि रहस्य को उद्घाटित करते हुए, सुकरात के रूप में जनसमूह को विवेक बाँटते हुए और लोओत्से की तरह कृत्रिमता त्यागने की शिक्षा एवं बालमनोविज्ञान पर अपनी तूलिका से सर्वप्रशंसित और सुग्राह्य रंग बिखेरनेवाले **आचार्यश्री सुदर्शनजी महाराज** ने साहित्य साधकों के बीच सशक्त हस्ताक्षर के रूप में रहते हुए अधोलिखित साहित्यों की रचना की है-

साहित्यों की सूची

1. शिक्षा-शास्त्र
2. सूर काव्य में कवि समय (शोध-प्रबन्ध)
3. शिक्षा के चक्रव्यूह में आज का अभिमन्यु
4. दीर्घायु भव
5. आओ शिक्षा-शिक्षा खेलें
6. शिक्षा: एक प्रश्न
7. जीवन को सुन्दर कैसे बनायें
8. जीवन ऊर्जा कैसे बढ़ायें
9. भारत की विभूतियाँ
10. बच्चों की पढ़ाई में माता-पिता की भूमिका
11. सेक्स-शिक्षा की वैज्ञानिकता
12. समग्र-शिक्षा
13. शिक्षा : आदेश या परामर्श
14. जो चाहे सो पावें

15. जब तक जीओ सुख से जीओ
16. जीवन को सफल कैसे बनायें
17. शिक्षा के सागर में जीवन की नाव
18. शिक्षा सागर के विविध मोती
19. ऊँचाईयों को छूती एक जिन्दगी
20. बच्चों के जीवन में शिक्षा के फूल कैसे खिले
21. अपना प्रकाश स्वयं बनो
22. आशीष मुझे दो, लो प्रणाम (काव्यसंग्रह)
23. हनुमान-सतइसा
24. सूक्ति-सागर
25. जीवन और अध्यात्म
26. जय सुदर्शन (पत्रिका)
27. भविष्य के द्वार पर दस्तक
28. उन्मुक्त आकाश के उड़ते पंछी
29. मंदिर में फूल नहीं अहंकार चढ़ाओ
30. Life Energy Centre
31. Godly Things Around You
32. डॉ.वाई.के.सुदर्शन का जीवन दर्शन
33. जीवन जीने की विधि (Methods of Life) भाग-1
34. जीवन जीने की विधि (Methods of Life) भाग-2
35. जीवन जीने की विधि (Methods of Life) भाग-3
36. जीवन जीने की विधि (Methods of Life) भाग-4

37. जीवन जीने की विधि (Methods of Life) भाग-5
38. जीवन जीने की विधि (Methods of Life) भाग-6
39. चलो आकाश को छू लें
40. जीवन प्रवाह है, ठहराव नहीं
41. झर-झर बहत अनंत
42. एक कदम रख कर तो देख
43. भक्ति के दोहे
44. श्रीराम दया करना (भक्ति गीत-संग्रह)
45. ऐसी करनी कर चलो
46. शिक्षा और नैतिकता
47. क्या खोया, क्या पाया
48. आचार्य सुदर्शन का अनंत जीवन-प्रवाह
49. आओ जीवन को महोत्सव बनाएँ
50. भोला महिमा
51. जीवन के विधि रंग
52. बच्चों की समुचित परवरिश
53. सुदर्शन रामायण (जीवन का महाकाव्य)
54. जीवन-संगीत (जीवनोपयोगी दोहे एवं भजन)
55. काल न आवे पास
56. श्रीराम महिमा
57. श्रीहनुमते नमः
58. कन्हैया, मैं नाचूँ तू गा

59. छूट न जाए डगरिया
60. गुरुज्ञान
61. आचार्य सुदर्शन की काव्य-चेतना
62. Basic Concept of Education
63. आचार्यश्री सुदर्शन का सकल ब्रह्माण्ड चिंतन
64. अब भी वक्त है, संभल ऐ नौजवान!
65. जीवन जीने की कला - (प्रथम भाग)
66. जीवन जीने की कला - (द्वितीय भाग)
67. जीवन जीने की कला - (तृतीय भाग)
68. प्राण ऊर्जा कैसे बढ़ाएं
69. जीवन पथ के फूल
70. योग भगाए रोग
71. पाते पाते देवनाम
72. पतझड़ के हरे पत्ते
73. मन की आँखे खोल
74. प्रार्थना से परमात्मा की ओर
75. दाम्पत्य-मैत्री
76. जीवन संगीत
77. Education : A reflection of life
78. आचार्यश्री के भक्तिगीतों में आत्मा के स्वर
79. Mystique of the Enlightment Soul
80. The Sources of Life Energy & Longevity

81. करें योग रहे निरोग
82. जिन ढूंढा, तिन पाइयां
83. वासना से उपासना की ओर
84. Education in Question
85. एकात्म मानव चिनतन और विन्यास
86. आचार्य सुदर्शन : खेत की मेंड़ से अध्यात्म के शिखर तक
87. Light of Blissfulness
88. गीत गाता चल
89. केवट-गीता
90. प्रातः-प्रार्थना
91. हमें भी पढ़ाओ